सद्ज्ञान ग्रन्थ माला का तेईसवां पुष्प — २२

मित्र भाव बढ़ाने की कला-



—श्रीराम शर्मा आचार्य ।

पहिला पाठ

बात चीत की कला में निपुणता प्राप्त कीजिए

एक महापुरुष का कथन है-"मुझे बोलने दो, मैं विश्व को विजय कर लूंगा।" सचमुच 'वाणी' से अधिक कारगर हथियार और कोई इस दुनियां में नहीं है। जिस आदमी में ठीक तरह उचित रीति से बात चीत करने की क्षमता है समझिये कि उसके पास एक मूल्यवान खजाना है। दूसरों पर प्रभाव डालने का प्रधान साधन वाणी है। देन लेन, व्यवहार, आचरण विद्वत्ता योग्यता आदि का प्रभाव डालने के लिये समय की, अवसर की, क्रियात्मक प्रयत्न की आवश्यकता होती है पर वार्तालाप एक ऐसा उपाय है जिसके द्वारा बहुत ही स्वल्प समय में दूसरों को प्रभावित किया जा सकता है।

बात चीत करने की कला में जो निपुण है वह असाधारण सम्पतिवान है। योग्यता का परिचय वाणी के द्वारा प्राप्त होता है। जिस व्यक्ति का विशेष परिचय मालूम नहीं है उससे कुछ देर बात चीत करने के उपरान्त जाना जा सकता है कि यह कैसे आचरण का है, कैसे विचार रखता है, कितना योग्य है कितना ज्ञान और अनुभव रखता है। जो दूसरों के ऊपर अपनी योग्यता प्रकट करता है ऐसे प्रमुख माध्यम को बहुत ही सावधानी के साथ बरता जाना चाहिये। कई ऐसे सुयोग्य व्यक्तियों को हम जानते हैं जो परीक्षा करने पर उत्तम कोटि का मस्तिष्क, उच्च हृदय और दृढ चरित्र वाले साबित होंगे परन्तु उनमें बात

चीत करने का शऊर न होने के कारण सर्व साधारण में मूर्ख समझे जाते हैं और उपेक्षणीय दृष्टि से देखे जाते हैं। उनकी योग्यताओं को जानते हुए भी लोग उनसे कुछ लाभ उठाने की इच्छा नहीं करते। कारण यह कि बात चीत के छछोरेपन से लोग झुँझला जाते हैं और उनसे दूर दूर बचते रहते हैं।

अनेक व्यक्ति ऐसे भी पाये जाते हैं जो इतने योग्य नहीं होते जितना कि सब लोग उन्हें समझते हैं। वाणी की कुशलता के द्वारा वे लोग दूसरों के मन पर अपनी ऐसी छाप बिठाते हैं कि सुनने वाले मुग्ध होजाते हैं। कई बार योग्यता रखने वाले लोग असफल रह जाते हैं और छोटी कोटि के लोग सफल हो जाते हैं। प्रकट करने के साधन ठीक हों तो कम योग्यता को ही भले प्रकार प्रदर्शित किया जा सकता है और उनके द्वारा बहुत काम निकाला जा सकता है। विद्युत विज्ञान के आचार्य जे० बी० राड का कथन है कि उत्पादन केन्द्र में जितनी बिजली उत्पन्न होती है उसका दो तिहाई भाग बिना उपयोग के ही बर्बाद होजाता है. पावर हाउस में उत्पन्न हुई बिजली का एक तिहाई भाग ही काम में आता है। वे कहते हैं कि अभी तक जो यंत्र बने हैं वे अधूरे हैं इसलिए आगे ऐसे यंत्रों का आविष्कार होना चाहिए जो उत्पादित बिजली की बर्बादी न होनें दें, जिसदिन इस प्रकार के यंत्र तैयार होजायंगे तब बिजली घरों की शक्ति तिगुनी बढ़ जायगी, खर्च तिहाई रह जायगा।

करीब करीब ऐसी ही बर्बादी मानवीय योग्यताओं की होती है। अधूरे विद्युत यंत्रों के कारण दो तिहाई बिजली नष्ट होजाती है, बात चीत की कला से अनभिज्ञ होने के कारण दो तिहाई से भी अधिक योग्यताऐं निकम्मी पड़ी रहती हैं। यदि इस विद्या की जानकारी हो तो तिगुना कार्य सम्पादन किया जा सकता है। जितनी सफलता आप प्राप्त करते हैं उतनी तो

तिहाई योग्यता रखनेवाला भी प्राप्त कर सकता है। आप अपनी शक्तियाँ बढ़ाने के लिए घोर परिश्रम करें किन्तु उनसे लाभ उठाने में असमर्थ रहें तो वह उपार्जन किस काम का ? उचित यह है कि जितना कुछ पास में है उसका ठीक ढङ्ग से उपयोग किया जाय। जिन्हें मूर्ख कहा जाता है या मूर्ख समझा जाता है वास्तव में वे उतने अयोग्य नहीं जितना कि खयाल किया जाता है। उनमें भी बहुत अंशों तक बुद्धिमत्ता होती है, परन्तु जिस अभाव के कारण उन्हें अपमानित होना पड़ता है वह अभाव है-बात चीत की कला से परचित न होना।

मनोगत भावों को भले प्रकार, उचित रीति से प्रकट कर सकने की योग्यता एक ऐसा आवश्यकीय गुण है जिसके बिना जीवन विकाश में भारी बाधा उपस्थित होती है। आपके मन में क्या विचार है, क्या इच्छा करते हैं क्या सम्मति रखते हैं जब तक यह प्रकट न हो तब तक किसी को क्या पता चलेगा ? मन ही मन कुड़कुड़ाने से दूसरों के संबन्ध में बुरी बुरी कल्पनाऐ करने से कुछ फायदा नहीं, आपको जो कठिनाई है, जो शिकायत है, जो संदेह है उसे स्पष्ट रूप से कह दीजिए, जो सुधार या परिवर्तन चाहते हैं उसे भी प्रकट कर दीजिए इस प्रकार अपनी विचार धारा को जब दूसरों के सामने रखेंगे और अपने कथन का औचित्य साबित करेंगे तो मनोनुकूल सुधार होजाने की बहुत कुछ आशा है।

भ्रम का, गलत फहमी का सबसे बड़ा कारण यह है कि झूँठे संकोच की झिझक के कारण लोग अपने भावों को प्रकट नहीं करते, इसलिए दूसरा यह समझता है कि आपको कोई कठिनाई या असुविधा नहीं है, जब तक कहा न जाय तब तक दूसरा व्यक्ति कैसे जानले कि आप क्या सोचते हैं और क्या चाहते हैं ? अप्रत्यक्ष रूप से, सांकेतिक भाषा में, विचारों को

जाहिर करना केवल भावुक और संवेदना शील लोगों पर प्रभाव डालता है, साधारण कोटि के हृदयों पर उसका बहुत ही कम असर होता है, अपनी निजी गुत्थियों में उलझे रहने के कारण दूसरों की सांकेतिक भाषा को समझने में वे या तो समर्थ नहीं होते या फिर थोड़ा ध्यान देकर फिर उसे भूल जाते हैं। अक्सर बहुत जरूरी कामों की ओर पहले ध्यान दिया जाता है और कम जरूरी कामों को पीछे के लिये डाल दिया जाता है। संभव है आपकी कठिनाई या इच्छा को कम जरूरी समझ कर पीछे डाला जाता हो, फिर के लिये टाला जाता हो, यदि सांकेतिक भाषा में मनोभाव प्रकट करने से काम चलता न दिखाई पड़े तो अपनी बात को स्पष्ट रूप से नम्र भाषा में कह दीजिये, उसे भीतर ही भीतर दबाये रह कर अपने को अधिक कठिनाई में मत डालते जाइए।

संकोच उन बातों के कहने में होता है जिनमें दूसरों की कुछ हानि की या अपने को किसी लाभ की संभावना होती है। ऐसे प्रस्ताव को रखते हुए झिझक इसलिये होती है कि आपकी उदारता सहन शीलता को धक्का लगेगा नेक नीयती पर आक्षेप किया जायगा या क्रोध का भाजन बनना पड़ेगा। यदि आपका पक्ष उचित सच्चा और न्याय पूर्ण तो इन कारणों से झिझकने की कोई आवश्यकता नहीं है, हाँ अनीति युक्त माँग कर रहे हों तो बात दूसरी है। यदि अनुचित या अन्याय युक्त आपकी माँग नहीं है तो अधिकारों की रक्षा के लिए निर्भयता पूर्वक अपनी मांग को प्रकट करना चाहिये। हर मनुष्य का पुनीत कर्तव्य है कि मानवता के अधिकारों को प्राप्त करे और उनकी रक्षा करे केवल व्यक्तिगत स्वार्थ के लिये नहीं वरन् इसलिये भी कि अपहरण और कायरता, इन दोनों घातक तत्वों का अन्त हो।

पटरिपु आध्यात्मिक सम्पत्तियों को दाबते चले आ

असुरत्व बढ़ रहा है और सात्विकता न्यून होती जा रही है। आत्मा क्लेश पा रही है और शैतानियत का शासन प्रबल होता जाता है क्या आप इस आध्यात्मिक अन्याय को सहन ही करते रहेंगे ? यदि करते रहेंगे तो निसन्देह पतन के गहरे गर्त में जा गिरेंगे। ईश्वर ने सद्गुणों की, सात्विक वृत्तियों की, सद् भावनाओं की अमानत आपको दी है और आदेश किया है कि यह पूंजी सुरक्षित रूप से अपने पास रहनी चाहिए यदि उस अमानत की रक्षा न की जा सकी और चोरों ने, पापों ने उस पर कब्जा कर लिया तो ईश्वर के संमुख जवाब देह होना पड़ेगा, अपराधी बनना पड़ेगा।

ठीक इसी तरह वाह्य जगत में मानवीय अधिकारों की अमानत ईश्वर ने आपके सुपुर्द की है। इसको अनीति पूर्वक किसी को मत छीनने दीजिए। गौ का दान कसाई को नहीं वरन् ब्राह्मण को होना चाहिए अपने जन्म सिद्धि अधिकारों को यदि बलात् छिनने देते हैं तो यह गौ का कसाई को दान करता हुआ यदि स्वेच्छा पूर्वक सत्कार्यों में अपने अधिकारों का त्याग करते हैं तो वह अपरिग्रह है, त्याग है, तप है। आत्मा, विश्वात्मा का एक अंश हैं। एक अंश में जो नीति या अनीति की वृद्धि होती है वह सम्पूर्ण विश्वात्मा में पाप पुन्य को बढ़ाती है, यदि आप ससार में पुन्य की, सदाशयता की, समानता की, वृद्धि चाहते हैं तो इसका आरम्भ अपने ऊपर से ही कीजिए। अपने अधिकारों की रक्षा के लिए जी तोड़ कोशिस करिए, इसके मार्ग में जो झूंठा संकोच, वाधा उपस्थित करता है उसे साहस पूर्वक हटा दीजिए।

दबंग रीति से, निर्भयता पूर्वक, खुले मस्तिष्क से बोलने का अभ्यास करिए। सच्ची और खरी बात कहने की आदत डालिए। जहां बोलने की जरूरत है वहाँ अनावश्यक चुप्पी मत

साधिए, ईश्वर ने वाणी का पुनीत दान ईश्वर ने इसलिए दिया है कि अपने मनोभावों को भली प्रकार प्रकट करें, भूले हुओं को समझावें, भ्रम का निवारण करें और अधिकारों की रक्षा करें। आप झेंपा मत कीजिए, अपने को हीन समझने या मुँह खोलते हुए डरने की कोई बात नहीं है। धीरे धीरे, गंभीरता पूर्वक, मुसकराते हुए, स्पष्ट स्वर में, सद्भावना के साथ बात किया कीजिए और खूब किया कीजिये, इससे आपकी योग्यता बढ़ेगी, दूसरों को प्रभावित करने में सफलता मिलेगी, मन हलका रहेगा और सफलता का मार्ग प्रशस्त होता जायगा।

ज्यादा बकझक करने की कोशिश मत कीजिये, अनावश्यक, अप्रासंगिक, अरुचि कर बातें करना, अपनी के आगे किसी की सुनता ही नहीं, हर घड़ी चवर चवर जीभ चलाते रहना, बेमौके बेसुरा राग अलापना, अपनी योग्यता से बाहर की बातें करना, शेखी बघारना, वाणी के दुर्गुण हैं, ऐसे लोगों को मूर्ख मुहफट्ट और असभ्य समझा जाता है, ऐसा न हो कि अधिक वाचालता के कारण आप इसी श्रेणी में पहुंच जावें। तीक्ष्ण दृष्टि से परीक्षण करते रहा कीजिये कि आपकी बात कितनी अधिक दिलचस्पी के साथ सुना जाता है या नहीं, सुनने में लोग ऊबते तो नहीं, उपेक्षा तो नहीं करते। यदि ऐसा होता हो तो अपने वार्तालाप की त्रुटियों को ढूंढिये और उन्हें सुधारने का उद्योग कीजिये अन्यथा बक्की झक्की समझ कर लोग आप से दूर भागने लगेंगे।

अपने लिये या दूसरों के लिये जिस में कुछ हित साधन होता है, ऐसी बातें करिए। किसी उद्देश्य को लेकर प्रयोजन युक्त भाषण कीजिये अन्यथा चुप रहिये। कडुई, हानिकारक, दुष्ट भावों को भड़काने वाली, भ्रम पूर्ण बातें मत कहिये। मधुर, नम्र, विनय युक्त, उचित और सद्भावना युक्त बातें करिए

जिससे दूसरों पर अच्छा प्रभाव पड़े, उन्हें प्रोत्साहन मिले, ज्ञान वृद्धि हो, शान्ति मिले तथा सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा हो। ऐसी वार्तालाप एक प्रकार का वाणी का तप है, मौन व्रत का अर्थ चुप रहना नहीं वरन् उत्तम बातें करना है। आप वाणी यज्ञ में प्रवृत्त हूजिये, मधुर और हितकर भाषण करने की ओर अग्रसर होते रहिये।

किसी आदमी से क्या बात करनी चाहिये ? यह सबसे पहिले जानने की बात है। अपनी निजी समस्याओं के बारे में सुनने, समझने, विचार करने के लिये हर मनुष्य के पास पर्याप्त काम पड़ा हुआ है, उसे अपनी निजी समस्याऐं ही बहुत अधिक मात्रा में सुलझानी हैं, किसी को इतनी फुरसत नहीं है कि अनावश्यक बातों को सुने, समझे, शिर खपावे। यदि आप चाहते हैं कि कोई व्यक्ति आपकी बात सुने तो पहले उसकी निजी समस्याओं और दिलचस्पी का विषय जानिये और उसीके संबंध में वार्तालाप आरम्भ कीजिये। यदि केवल मनोरंजन के लिये समय निकालने के लिये बातें करनी हैं तो उसकी निजी आवश्यकताओं के बारे में, निजी सफलताओं के बारे में, निजी कठिनाइयों के बारे में शुरूआत कीजिये। मनुष्य चाहता है कि हमारे ऊपर जो कष्ट है, जिन कठिनाइयों का मुकाबिला कर रहे हैं उनके लिये कोई सहानुभूति प्रकट करे, जो सफलताऐं हमने प्राप्त की हैं उनके लिये कोई प्रशंसा करे, जो काम हम करते हैं उसके महत्व को वर्णन करे, जिस जानकारी की आवश्यकता है उसे बतावें, जिस विषय में दिलचस्पी रखते हैं उसे सुनाकर तृप्त करे।

यदि आप दूसरे की इच्छाओं को जानते हुये, तदनुसार वार्तालाप का विषय आरंभ करते हैं तो उसकी दिलचस्पी बढ़ती है, अपने जरूरी काम को छोड़कर भी आपकी बातों को बहुत

देर तक सुनता रह सकता है। जो प्रयोजन आप सिद्ध करना चाहते हैं उसे एक दम प्रकट मत कीजिए वरन् श्रोता के निज विषय को छोड़कर उसके मन को तरंगित करिए, अपने प्रिय विषय सुनाने वाले की ओर सुनने वाले की सद्भावना बहुत अधिक मात्रा में बढ़ जाती है। जिसकी सद्भावना आपको ओर बढ़ रही है, जो अपने प्रिय विषय को श्रवण करके तरंगित हो रहा है उसके सामने उचित और आकर्षक रीति से अपनी बात रखें तो बहुत ही शीघ्र और सरलता पूर्वक अपने प्रस्ताव से सहमत कर सकते हैं। अमेरिका का कुख्यात व्यभिचारी जसि बीचर अनेक रूपवती और धनी महिलाओं को अपने चंगुल में फँसाने, नाम बदल बदल कर विभिन्न स्थानों में अपने तेरह विवाह करने के अपराध में पकड़ा गया। अदालत में उसकी कार्य पद्धति प्रकट हुई। यह धूर्त न तो कुछ सुन्दर था न धनी किसी और योग्यता वाला। केवल एक ही योग्यता उसमें थी 'मधुर वार्तालाप'। वह स्त्रियों की रूप यौवन की खूब प्रशंसा करता था, उनके प्रिय विषयपर वार्तालाप करता था, सफलता पर बधाई देता था, कठिनाइयों में सहानुभूति प्रकट करता था इस प्रकार लुभाने वाली वाणी से मोहित करके उन्हें अपने साथ विवाह करने पर रजामंद कर लेता था। भोली भाली स्त्रियों को कुमार्ग में घसीट लेजाने वाले व्यभिचारी अक्सर इसी हथियार को काम में लाते हैं। पति या सास ननद जिनके द्वारा युवती को कुछ कष्ट मिलता है उनकी निंदा, तथा उसकी निर्दोषता, सरलता भलमनसाहत की प्रशंसा करके लुभा लेते हैं। स्त्रियों में पुरुषों की अपेक्षा सहानुभूति और प्रशंसा की इच्छा अधिक होती है वे अपेक्षा कृत अधिक आकर्षित होती हैं।

आप किसी को ठगने या कुमार्ग पर ले जाने के लिए अपनी पुनीत वाणी का उपयोग कदापि न कीजिए, शारदा मा

का इस प्रकार दुरुपयोग करेंगे तो अन्त में बहुत ही दुखदायी परिणाम उपस्थित होगा। आप अपना दृष्टिकोण ऊँचा रखिये, ऊँचे और भले उद्देश्यों के लिये बात चीत कीजिये, परन्तु स्मरण रखिये वही वार्तालाप सफल हो सकता है जिसमें सुनने वाला दिलचस्पी लेता है। यदि आपकी बातों में उसे अपने काम की कोई बात प्रतीत न होगी तो वह अरुचि पूर्वक कुछ देर सुन भले ही ले पर उससे प्रभावित जरा भी न होगा। ऐसे छूछे और एकाङ्गी प्रसङ्गों में कोई सार नहीं निकलता, कोई प्रयोजन सिद्ध नहीं होता। बेकार की दांता किट किट करने का शौक हो तब तो बात अलग है अन्यथा यदि कुछ लाभ की कम से कम मैत्री वृद्धि की-आशा से वाणी विनिमय करना चाहते हैं तो इसका ध्यान रखिये कि आरम्भ दूसरे की दिलचस्पी के विषयको लेकर किया जाय।

बचे हुए समय को लोग गपशप में गुजारते हैं। अक्सर इस गप शप का विषय अश्लील या वीभत्स होता है। या तो गंदी, फैशन, कामुकता पूर्ण बातों से मनोविनोद किया जाता है या फिर किसी की बुराई करने का अवसर ढूँढा जाता है। यदि कुछ ठीक आधार न मिले तो भी अश्लीलता या निन्दा के मन घड़ंत अवतरण तैयार कर लेते हैं। मित्र मंडलिया अपना बहुमूल्य समय इस प्रकार निकृष्ट कोटि के आधार पर मनोविनोद करती हैं। समय सम्पत्ति है, उसका इस प्रकार दुरुपयोग न होना चाहिए, मनोरंजन के लिये यात्रा के अनुभव, कौतूहल पूर्ण घटनाऐं, अद्भुत वृत्तान्त, रहस्योद्घाटन, आदि का सहारा लिया जा सकता है जिससे जानकारी एवं चतुरता में वृद्धि हो तथा नीच निन्दित वृत्तियों का उभार न हो।

यह युग बहस का है। बहस से सरकारें चलाई जाती हैं, अदालतों में बहस ही प्रधान है, सभा संस्थाओं में बहस की

उपरान्त कुछ निर्णय होता है । प्रजातंत्र, व्यक्तिगत स्वतंत्रता, स्वेच्छासहयोग, विचार परिवर्तन एवं अधिक उचित निर्णय पर पहुँचने का एक मात्र आधार बहस है, जिस कार्य में बहुत लोगों का समावेश है उनके बिखरे विचारों को एक स्थान पर केन्द्रीभूत करने की यही एक प्रणाली है। इस युग में राज काज से लेकर घर गृहस्थी की व्यवस्था का सञ्चालन बहस के आधार पर होता है या होने की अपेक्षा रखता है।

बहस के लिए जिस धैर्य की आवश्यकता है हम लोगों में उसका बहुत ही अभाव होता है। किसी सार्वजनिक विषय पर बात चीत करते करते निजी प्रसङ्ग आजाता है और बात का बतंगड़ बनकर लड़ाई झगड़े का वैमनस्य का, मारपीट का अवसर आजाता है। बहुत थोड़ी देर सहिष्णुता के साथ बहस चलती है इसके बाद आपस में एक दूसरे के ऊपर आक्षेप होने लगते हैं, व्यक्तिगत बुराई करने लगते हैं, जिस प्रसङ्ग पर वार्तालाप चल रहा था वह अधूरा छूट जाता है और उसके स्थान पर आपसी छिद्रान्वेषण शुरू हो जाता है। यह दिमागी कमजोरी, असहिष्णुता, कल्पना शक्ति की कमी है इसे जितनी जल्दी हो दूर करना चाहिए। बहस करना सत्य की शोध करने के लिए बहुत ही आवश्यकहै। यदि आप सत्य के पुजारी हैं और उचित नतीजे पर पहुंचने की इच्छा करते हैं और बहस करने की कला का अभ्यास कीजिए।

कोई व्यक्ति छोटी उम्र का है या कम जानकारी रखता है तो उसे यह सोचकर चुप न रह जाना चाहिए कि बड़ों के सामने किस प्रकार मुँह खोलूं इसमें उनका अपमान होगा या पूछने से मुझे मूर्ख अयोग्य समझा जायगा अथवा नेक नीयती पर कोई अविश्वास करेगा। हर मनुष्य को अपनी सम्मति प्रकट करते समय यह इतमीनान रखना चाहिए कि मेरी सम्मति

को अच्छी नीयत से प्रकट किया हुआ समझा जायगा, कोई उलटा अर्थ न लगाया जायगा। जब तक यह विश्वास नहीं होता तब तक मत प्रकट करने में झिझक होती है। ऐसा झिझक अनावश्यक है उसे दूर कर देना चाहिए और जो कुछ कहना है साफ साफ, स्पष्ट स्वर में, मध्यम आवाज से, निर्भीकता पूर्वक कह देना चाहिए। यदि आप ठीक अवसर पर तो झेंप के मारे कुछ कहते नहीं और पीछे पीछे उस निर्णय की बुराई करते हैं तो वह उचित नहीं, आपमें इतना साहस होना चाहिए कि ठीक अवसर पर अपनी बात को धैर्य पूर्वक रख सकें और दूसरों को उससे प्रभावित कर सकें।

ऐसा मत मान बैठिए कि सबसे बड़ा बुद्धिमान मैं ही हूं। मूर्ख लोग दुनियां में डेढ़ अकल समझते हैं उनका खयाल होता है कि ईश्वर ने एक अकल हमें दी है और शेष आधी सारी दुनियाँ के हिस्से में आई है। इस प्रकार आपकी मान्यता बड़ी ही भयङ्कर है और लाभदायक निर्णय तक पहुंचने में भारी बाधा उपस्थित करती है। आप अकेले ही इस संसार में बुद्धिमान नहीं है, और लोग भी हैं। संभव है किसी विषय में आप गलती पर हों और दूसरों की राय ठीक हो। इसलिए स्थिति की गहराई तक पहुंचने का प्रयत्न करिए, दूसरों के विचार अधिक ठोस हैं और उनके पीछे अधिक प्रामाणिकता हैं तो उन्हें स्वीकार करने के लिए तैयार रहना चाहिए। अपनी भूलों को तलाश करने और उन्हें सुधारने के लिए एक विद्यार्थी की भांति जिज्ञासु की तरह, मनको खुला रखिए। हठधर्मी से अपनी ही बात पर अड़े रहना अनुचित है इससे कोई अच्छा परिणाम नहीं निकलता दूसरों की निगाह में आप घृणास्पद जिद्दी ठहरते हैं और स्वयं उचित निर्णय तक पहुंचने से, सत्य की शोध करने से बञ्चित रह जाते हैं।

दूसरे जो विचार प्रकट कर रहे हैं उनकी नेक नीयती पर विश्वास कीजिए। यदि उनमें बदनीयती छिपी हुई दिखाई पड़े तो भी उनकी दलील पर उसी ढङ्ग से विवेचना कीजिये जैसे कि नेक नीयती से कही हुई बात पर की जाती है। तुनक मिजाजी, बिगड़ना, बात बात में अपमान खयाल करना उचित नहीं, इससे बहस की गम्भीरता नष्ट हो जाती है। दूसरों की बात चीत का ढंग कुछ अपमान जनक, दोषपूर्ण हो तो भी उसके वाह्य रूप पर ध्यान न देकर उसके तथ्य पर विचार करना चाहिए सहानुभूति पूर्ण रवैया रखने से अयोग्य व्यक्तियों के बीच में भी बहस जारी रखी जा सकती है और किसी ठीक निर्णय पर पहुंचा जा सकता है। सैद्धान्तिक बहस में व्यक्ति गत प्रसङ्गोंको भूलकर भी न आने देना चाहिए अन्यथा बहस का उद्देश्य नष्ट हो जायगा और व्यर्थ की कर्कशता उठ खड़ी होगी।

आप खुद ही मत कहते जाइए, दूसरों को भी कहने दीजिये। बीच में बात मत काटिये वरन् पूरी बात सुनने तक ठहरे रहिये। दूसरा किसी प्रसंग को कह रहा है तो उसे पूरा कह लेने दीजिए, 'इसे तो हम जानते हैं' 'यह तो हमें पहले ही मालूम है' ऐसा कहने से कहने वाले का तथा दूसरे सुनने वालों का मजा बिगड़ जाता है। अपने विचारों का विरोध होते देख धैर्य खोना उचित नहीं, यह कोई लाजमी बात नहीं है कि आपके विचार ठीक ही हों, और उनके विरुद्ध मत रखने का किसी को अधिकार ही न हो। विरोधी पर बिगड़ मत खड़े हूजिये वरन् धैर्य पूर्वक पूरी बात सुनिये और शान्ति के साथ तर्क और प्रमाणों द्वारा प्रत्युत्तर देकर पुनः अपनी बात की पुष्टि कीजिये।

जो बात आपको मालूम नहीं है, उसको गलत सलत मत कहिये वरन् प्रश्नकर्ता को अन्य जानकार व्यक्तियों या पुस्तकों की सहायता लेने के लिए कहिए। असमंजस में पड़ने य

शरमाने की कोई बात नहीं है कोई व्यक्ति पूर्ण ज्ञाता होने का दावा नहीं कर सकता। जो बात मालूम नहीं है उसके बारे में स्पष्ट कह देना उचित है, जिससे दूसरों को धोखा न हो, और वस्तु स्थिति मालूम होने पर झूँठा या बहानेबाज न बनना पड़े।

कोई लोग प्रश्न से बहुत घबराते हैं, उन्हें लगता है मानो कोई हमारे ऊपर आक्रमण कर रहा है, कुछ इल्जाम लगा रहा है, कोई भेद मालूम कर रहा है, या कुछ छीन रहा है। साधारण सी बात के उत्तर में वे आपे से बाहर हो जाते हैं और अंट संट बातें कहने लगते हैं। यह सशंकित, अविश्वासी और अनुदार हृदय का लक्षण है। आप उत्तर देने में बहुत उदार रहिये। जानकारी की इच्छा से, पूछे गये प्रश्नों का नेकनीयती से उत्तर दिया जाय तो प्रश्नकर्ता का यदि कोई अनुचित उद्देश्य रहा हो तो वह भी बदल जाता है। किसी की जानकारी बढ़ाना उसके साथ में एक प्रकार का उपकार करना है, उपकारी के प्रति कुछ न कुछ कृतज्ञता का भाव होता है जिसके द्वारा दुर्भाव की किसी न किसी अंश में सफाई होती ही है । प्रश्न का उत्तर प्रश्न में देना बेहूदापन है। कोई पूछता है कि लकड़ी की दुकान कहाँ है ? आप उत्तर देते हैं–मैं कोई लकड़हारा हूं ? कोई पूछता है– 'अमुक व्यक्ति कहाँ मिलेगा ? आप उत्तर देते हैं— मैं कोई उसका नौकर हूं ?" ऐसे उत्तर अनुदारता और घमंडीपन प्रकट करते हैं। सरलता से 'हाँ' या 'ना' में उत्तर दिया जा सकता। पूछे गये प्रश्न के बारे में जितना जानते हैं उतना बता दीजिये अन्यथा कह दीजिये–'मुझे मालूम नहीं'। सरलता और मधुरता से जो बात कही जा सकती है उसके लिये प्रश्न वाचक उत्तर देकर कटुता उत्पन्न करने में कुछ अच्छाई थोड़े ही है।

अपरिचित व्यक्ति से वार्तालाप आरम्भ करते हुए प्रश्नों की झड़ी लगा देना अनुचित है। आप का क्या नाम है ? कहाँ

रहते हैं ? कौन जात है ? क्या पेशा करते हैं ? कहां से आये हैं कहां जारहे हैं ? यह बातें अपरिचित होने की दशा में अचानक पूछना, सभ्यता के विरुद्ध है । इसमें उत्तर देने वाले को बुरा लग सकता है, वह उपेक्षा कर सकता है या अण्ट सन्ट उत्तर दे सकता है । जब तक किसी के स्वभाव के बारे में कुछ जानकारी न हो तब तक अदालत जैसे गवाह पर प्रश्नों की झड़ी लगा देती है वैसा व्यवहार करना उचित नहीं । यदि किसी का परिचय प्राप्त करना है या स्तब्धता भङ्ग करके वार्तालाप का सिलसिला चलाना है तो किसी आम प्रसङ्ग को लेकर शुरू करना चाहिए वर्तमान मौसम, फसल, व्यापार, तात्कालिक परिस्थिति, कोई अखबारी खबर, सामने का कोई दृश्य आदि का आधार लेकर बात चीत आरंभ की जा सकती है और फिर स्वभाव संबंधी जानकारी होने पर निजी पूछताछ तक बढ़ा जा सकता है ।

कौन आदमी इस समय किस मनो दशा में है, इसको भांप कर जो आदमी तदनुसार वार्तालाप की तैयारी करते हैं वे अपना प्रयोजन सिद्ध करने में बहुत कुछ सफल होते हैं। अफसरों से मुलाकात करके काम निकालने वाले लोग पहले अर्दली से यह मालूम कर लेते हैं कि इस समय 'साहब' का 'मिजाज' कैसा है । यदि मिजाज अनुकूल देखते हैं तो प्रयोजन प्रकट करते हैं अन्यथा किसी दूसरे अवसर की प्रतीक्षा तक अपनी बात को स्थगित रखते हैं । यह बात बड़े आदमियों या अफसरों के बारे में ही नहीं है वरन् सर्व साधारण के बारे में भी है । निजी कारणों से जब मनुष्य का चित्त डांवा डोल होरहा हो, शोक, चिन्ता, क्रोध या बेचैनी में निमग्न हो तो उस समय कोई अप्रिय, भारी या उसकी दृष्टि में अनावश्यक जँचने वाला प्रस्ताव न रखने चाहिए क्योंकि डांवाडोल मनोदशा के कारण वह आपकी बातको न तो ठीक तरह समझ सकेगा और न

उसपर उचित फैसला कर सकेगा ऐसी दशा में प्रयास विफल ही रहेगा। यदि उसी दशा में अपनी बात कहना आवश्यक हो तो पहले उसकी विषम मनोस्थिति के प्रति सहानुभूति प्रकट कीजिए, और कहिए कि ऐसे अवसर पर इच्छा न रहते हुए भी कहने की मजबूरी प्रकट करने के उपरान्त अपनी बातको कहिए। इस प्रकार के डांवाडोल स्वभाव के बारे में जब आप परोक्ष रूप से सावधान करा देते हैं तो वह सजग हो जाता है और अपनी मनःथिति पर काबू रखकर आपकी बात को सुनता समझता है। ऐसी दशा में किसी कदर अच्छे परिणाम की आशा की जा सकती है।

अपनी निजी बातें सब किसीके सामने प्रकट मत करिए। जिनके कहने से अपनी मूर्खता, गलती, गुप्त जानकारी, का पता चलता हो वह बातें केवल निजी और विश्वासनीय मित्रों से ही कहने योग्य हैं। अनाधिकारी और साधारण परिचय वाले व्यक्तियों तक वे बातें पहुंचें तो अपनी महत्ता घटाती है, लघुता प्रकट करती हैं। आप अधिक कष्ट में हैं, अपमानित हुए हैं, घरेलू अनिष्टों से ग्रसित हैं, रुग्ण हैं, चिन्तित हैं तो उन बातों को उनके सामने न कहिए जो निवारण तो कर नहीं सकते वरन् मजाक बनाते हैं। जिस प्रकार गढ़े धन को प्रसिद्ध कर देना ठीक नहीं उसी प्रकार भावी योजनाओं को, गुप्त रहस्यों को, न कहने योग्य बातों को भी छिपा रखना चाहिए। जिसके पेट में बात नहीं पचती उस पोले बांस को छलोरा समझकर गंभीर वार्तालाप में कोई उसे शामिल नहीं करता।

किसी कार्य व्यस्त आदमी से भेंट करनी हो तो अपने प्रयोजन को संक्षेप में कह दीजिए, और उसी मर्यादा में बहस करके थोड़े समय में किसी निष्कर्ष पर पहुँच जाइए। संसार के कार्य व्यस्त महापुरुषों का समय बहुत मूल्यवान होता है वे

मुलाकात करने वालों को कुछ मिनटें ही दे सकते हैं। यदि सिलसिले से आवश्यक बातों को न करके, बीच बीच में अप्रासङ्गिक और बेतरतीब बातें की जाँय तो समय की बहुत बर्बादी होती है। समय निरर्थक बातों में चला जाता है और आवश्यक बातें अधूरी छूट जाती हैं। इसलिए कार्य व्यस्त आदमियों के पास मिलने जावें तो जो बातें कहनी हैं उनको क्रम बद्ध एक छोटे कागज पर नोट कर लीजिये और उन्हें उचित विस्तार के साथ जहाँ तक संभव हो संक्षेप में कह दीजिए ऐसा करने से उनका बहुमूल्य समय व्यर्थ नष्ट न होगा और आपको भी अधिक देर न लगानी पड़ेगी। समय बचाने का सदैव ध्यान रखिए क्योंकि समय ही सम्पत्ति है। यदि आपके पास फालतू वक्त है तो इसका अर्थ यह नहीं है कि दूसरों के पास भी वैसी ही फुरसत है, आप ठलुए हैं तो दूसरों को ठलुआ मत समझिए। दूसरों का—खासकर कार्य व्यस्त लोगों का कम से कम बर्बाद कीजिए, उनका उतना ही समय लीजिए जितने में वे अनखने न लगें, उठ जाने के लिए संकेत न करने लगें। पत्र व्यवहार में भी ऐसा ही कीजिए, बहुत लम्बी, बेकार की बातों से भरी हुई चिट्ठियां उन लोगों को मत लिखिए जिनके पास बहुत काम रहता है। संक्षिप्त में प्रयोजन प्रकट करना यही लाभदायक तरीका है अन्यथा बेकार के खर्रे बिना पढ़े मुद्दतों पड़े रहेंगे और उनका उत्तर न मिलने या बिलम्ब से मिलने की अधिक संभावना रहेगी।

मुस्कराकर, प्रसन्नता प्रकट करते हुए बात चीत करना एक बहुत ही आकर्षक ढंग है जिसके द्वारा सुनने वाले का अनायास ही आपकी ओर खिंचाव होता है, जब आप मुस्कराते हुए आनंदित होकर अपना कथन आरंभ करते हैं तो उसके दो तात्पर्य निकलते हैं। पहला यह कि आप मनस्वी हैं, दृढ़ निश्चयी

है, और सुलझे हुए विचारों के हैं। दूसरा यह कि सुनने वाले से मिलकर आप प्रसन्न हुए हैं, उसके प्रति प्रेम -भाव रखते हैं। मुस्कराहट मनकी दृढ़ स्थिति को सूचित करती है जिसके विचार संदिग्ध हैं, नाना प्रकार के भावों का उतार चढ़ाव चहरे पर प्रदर्शित करता है उसे अविश्वास की दृष्टि से देखा जाता है। ऐसे आदमी के व्यक्तित्व की कोई अच्छी छाप दूसरे पर नहीं लगती। किन्तु यदि प्रसन्नता चहरे पर खेल रही है तो उसका तात्पर्य दृढ़ता, गंभीरता और पूर्णता है। उसे सुलझा हुआ सुस्थिर समझ कर स्वभावतः विश्वास करने की इच्छा होती है। मुस्कराहट में दूसरा तात्पर्य है—सुनने वाले के आगमन से खुशी प्रकट होना, यह भी असाधारण बात है। जहां उपेक्षा होती है वहां संबंध रखना लोग पसंद नहीं करते पर जहां प्रेम और सत्कार का भाव टपकता है वहां बार बार जाने की इच्छा होती है। थोड़ी असुविधा उठाकर भी वहां पहुंचने का प्रयत्न किया जाता है क्योंकि वहां दुहरा लाभ है, साधारण काम तो पूरा होता ही है साथ में प्रेम और आदर की आत्मिक खुराक मुफ्त में मिल जाती है। प्रसन्नता के साथ वार्तालाप करने के दोनों ही पहलू एक से एक जोरदार हैं। विश्वासी आदमी से व्यवहार में धोखा होने का अन्देशा नहीं रहता उसकी मानसिक स्थिरता से अन्य लाभ प्राप्त होने की भी आशा रहती है अतएव उससे संबंध रखना वैसे भी लाभदायक ठहरता है।

आप जिन लोगों का संबंध अपने साथ अधिक समय तक रखना उचित समझते हैं उनसे मुस्करा कर बोला कीजिए, प्रसन्नता प्रकट करते हुए बात चीत किया कीजिए। यह ऐसा बे पूंजी का व्यापार है जिसमें खर्च बिलकुल नहीं और आमदनी बहुत है। जब आप थोड़ा हँसते हैं तो खिलते हुए पुष्प की भांति अपनी सुगंधि चारों ओर बखेर देते हैं। उसकी सुगंध से दूसरों को

और श्रोताओं का मन लुभायमान हो जाता है । पुष्प में र
और गंध है मुसकराहट में सौन्दर्य और मिठास है । भौंरे औ
मधु मक्खियों का जमघट फूल पर रहता है आप की मुसकराह
पर मुग्ध होकर संबंधियों का समूह पीछे पीछे लगा फिरेगा

आत्मीयता प्रकट करने का अच्छा तरीका यह है कि
बराबर वालों का और छोटों का आदर पूर्वक नाम लेकर पुकारि
नाम के पहले पंडित बाबू लाला आदि विशेषण पीछे शर्मा
वर्मा, गुप्ता आदि गोत्र सूचक पदवी लगाने से नाम आदर यु
होजाता है, वार्तालाप के सिलसिले में बराबर वालों का ना
बीच बीच में कई बार लिया कीजिए । यह तथ्य को सम
लीजिए कि—"मनुष्य का नाम उसकी भाषा में उसके लि
सबसे मधुर और सबसे महत्व पूर्ण शब्द है ।" अपना नाम लि
जाते सुनकर मनमें एक गुदगुदी से उत्पन्न होती है, क्योंकि
उसमें अपनेपन का भाव है आत्मीयता का संमिश्रण है, महाश
जी, महानुभाव. श्रीमान जी आदि शब्द छूंछे और आडंबर
हैं. इनसे अपनापन प्रकट नहीं होता इसलिए सुनने वाले
कोई विशेष आकर्षण नहीं दिखाई पड़ता किन्तु आदर पू
नाम लेकर पुकारने से सुनने वाले का हृदय हुलस आता है।

बड़ों को उनकी आरंभिक पदवी के साथ 'जी' लगा
पुकारा कीजिए जैसे पंडित जी, लालाजी, ठाकुर साहब आदि
यदि उनका कोई और विशेषण है जैसे नम्बरदार साहब, वैद्य
डाक्टर साहब, खजानची साहब, तो उसे कहिए। यदि अधि
निकट का परिचय है तो रिश्तेदारी सूचक संबोधनों का प्रयो
करिए जैसे चाचा जी, बाबा साहब, भैया जी, ताऊ जी आदि
कुछ रिश्ते जो लघुता सूचक हैं उन्हें कहना उचित नहीं
साला, भतीजा, भावी, साली आदि । छोटों को बेटा, ब
कहकर नहीं पुकारना चाहिए वरन् लल्लू, कुँवरसाहब जैसे

शब्दों को काम में लाना चाहिए। स्त्रियों को बेटी, बहिनजी या माताजी शब्द ही आमतौर पर काम में लाने चाहिए। खास रिश्ते की बात अलग है. जिनसे दूर का रिश्ता है उन्हें इन्हीं तीन रिश्तों के अन्तर्गत ले आना चाहिए।

इस प्रकार रिश्तेदारी, पदवी मात्र नाम, तथा आदर पूर्वक नाम लेकर लोगों का संबोधन किया करें तो आप निश्चय ही दूसरों पर अपनी आत्मायता की छाप जमाने में समर्थ होंगे और बदले में उनकी आत्मीयता प्राप्त करेंगे। बोलने में यह बहुत मधुर साधन है कि दूसरे को यथोचित रीति से नाम के निजीपन के साथ पुकारा जाय। आप प्रेम संबंधों की वृद्धि करना चाहते हैं, परायों को अपना बनाना चाहते हैं, घनिष्टता बढ़ाना चाहते हैं तो उनके कानों में रस टपकाइए। अपना नाम सबसे मधुर शब्द है, इस शब्द को एक से अधिक बार कहिए, संबोधन की आवश्यता पड़ने पर उसी का उपयोग करिए।



दूसरा पाठ

दूसरों को अपने मत का बनाने के लिए इन नियमों को मत भूलिए !

यदि किसी तथ्य पर सुनने वाले को सहमत करना है तो प्रारंभ ऐसे विषय से आरम्भ करो जिसमें आप दोनों पहले से ही सहमत हैं। यदि सुनने वाला वार्ता के आरंभ काल में आपसे सहमत है और हां, हां करता जाता है तो आगे मतभेद के विषय में भी नरम होजायगा और यदि उसका कोई विशेष आग्रह नहीं है तो आसानी से आपकी बात पर रजामंद होजायगा। किन्तु यदि आपने आरंभ किसी विपरीत और मतभेद वाले विषय को लेकर किया और वह पहले से ही विरोधी बन गया आप की बातों का खंडन करने लगा, उत्तर प्रत्युत्तर देने लगा तो समझिये कि अन्त तक यही सिलसिला चलता रहेगा। मामूली सी बातों का भी विरोध करेगा, यहां तक जिन सिद्धान्तों से वह सहमत रहा है और उनके भी खिलाफ कहने लगता है। आरंभ में यदि मनकी स्थिति तरल और सहमति सूचक नरमी लिये हुए होजाय तो वह आगे भी उसी गति से बहती हुई चली जाती है और यदि स्नायु तन जांय, भवें टेढ़ी होजांय, विरोधी प्रवृत्तियां चलने लगें तो उनका बहाव नकरात्मक ही रहा आता है। कुछ देर के ही वार्तालाप से व्यक्तिगत सहमति या व्यक्तिगत विरोध की धाराऐं चल उठती हैं तदनुसार ही सुनने वाले का प्रस्ताव पर सहमत असहमत होना निर्भर रहता है। ऐसे लोग बहुत ही

कम मिलते हैं जो कहे हुए तथ्य की गंभीरता तक पहुंच कर उसका विवेचन करें और तब किसी निर्णय पर पहुंचें।

"आप गलती पर हैं" यह शब्द बड़ी अशुभ घड़ी में कहे जाते हैं। जिसको आप गलती पर बताते हैं समझ लीजिए कि वह प्रकट या मौन भाषा में यही उत्तर देगा कि—"तुम खुद गलती पर हो।" मनोविज्ञान शास्त्र के खोजी विद्वान फ्रायडका कथन है कि आमतौर से लोग अपनी निर्दोषता और बुद्धिमत्ता पर विश्वास करते हैं। यदि किसी को गलती पर बताया जाय तो इसका अर्थ है उसे दोषी या मूर्ख कहा जा रहा है। यह स्थिति उसके लिए असह्य है। कोई भी यह नहीं चाहता कि उसकी शान में ऐसी कड़ुई बात कही जाय। इसलिए यदि आपको किसी की गलती बताकर सही रास्ते पर लाना है तो इस कठिन कार्य को पूरा करने के लिए यह तथ्य हृदयंगम कर लीजिए कि किसी से यह न कहा जाय कि 'तुम गलती पर हो' दो टूक भाषा में ऐसा कह देना स्पष्ट ही गाली देने के बराबर है। इसका जबाब कुए की आवाज की तरह पावेंगे। सुधार करने की इच्छा धूलि में मिल जायगी और उलटा एक नया कलह मिश्रित द्वेष भाव उपज पड़ेगा।

सबकी बुद्धि एक समान नहीं है। आत्म निरीक्षण करने की, अपने आपको जांचने की योग्यता सब किसी में नहीं होती। स्वर्गीय डान टामस कहा करते थे कि—"इस दुनियां में नब्बे प्रतिशत आधे पागल रहते हैं" आधे पागल न भी हों तो भी इतना तो निश्चय ही मानना पड़ेगा कि आत्म परीक्षण करने और वस्तुस्थिति को समझने की योग्यता बहुत कम लोगों में होती है। वे भावावेश, कल्पना की उड़ान, और स्वतंत्र धारणा के अनुसार अपना २ मत निर्धारित करते हैं, इस मत निर्माण में विचार शीलता की नहीं वरन् अन्ध विश्वास की प्रधानता होती

है। जहां विचार शीलता की प्रधानता है वहाँ गलती समझने और स्वीकार करने में क्षमता होगी किन्तु ऐसे सौभाग्यशाली पुरुष अभी इस भूतल में उंगलियों पर गिनने लायक हैं, अधिकांश तो असंकुत मस्तिष्क के ही पड़े हुए हैं व्यवहार उन्हीं से पड़ता है ऐसी दशा में नीति और कुशलता से काम न लिया जाय तो अच्छे परिणाम की आशा नहीं की जा सकती।

जब आपको किसी की गलती बतानी है तो पहले उसके साथ सहानुभूति प्रकट करिए। जिस स्थिति में वह गलती हुई, उस स्थिति की पेचीदगी के कारण वह वैसा करने को मजबूर हुआ ऐसा प्रकट करिए। क्योंकि यदि जान बूझ कर भी उसने गलती की है तो वैसा कहकर उसकी लोक लज्जा को नष्ट करना उचित नहीं, क्योंकि अपने को मूर्ख सिद्ध न होने देने के लिए वह दुराग्रह करेगा और गलती को गलती ही साबित न होने देगा, उलटा दुराग्रह पूर्वक उसका समर्थन करेगा। लड़ झगड़ कर आप अधिक से अधिक किसी को चुप कर सकते हैं पर इससे वह उस बात को मानने के लिए मजबूर न हो जायगा, वरन् अपने अपमान का बदला लेनेके लिए उसी पर अड़ बैठेगा।

उस समय की परिस्थिति से मजबूर होकर, दबाब से, या अन्य कारण वश वैसा करना पड़ा होगा, ऐसा कहने से गलती को स्वीकार करना सरल हो जाता है। "गलती बताकर अपनी बुद्धिमानी साबित की जा रही है।" ऐसी आशंका भी उसके मनमें मत उपजने दीजिए। जिस प्रकार की भूल उस आदमी से हुई है वैसी ही अन्य लोग भी करते हैं या कर चुके हैं ऐसे उदाहरण बताने से गलती स्वीकार करने में उसे विशेष हिचकिचाहट नहीं होती। यदि आपसे स्वयं वैसी ही या उससे मिलती जुलती कोई भूल हुई है तो उसका उदाहरण देकर सुनने वाले को निश्चिन्त कर सकते हैं कि उसको नीचा साबित करने

के लिए वह बात नहीं कही जा रही है। आम लोगों के सामने इस प्रकार के वार्तालाप करने की अपेक्षा एकान्त में करना अधिक उपयोगी होता है क्योंकि प्रतिष्ठा घटने की अधिक आशंका उसे नहीं रहती और सचाई की तह तक पहुँचने में किसी हद तक मार्ग सुगम हो जाता है।

जिसने गलती की है उसे अपराधी या पापी कहा जा सकता है। पर ऐसा कहना हानिकर है क्योंकि इससे उसके तामस स्वभावों को प्रोत्साहन मिलेगा। जब अपराधी, पापी, दुष्ट दुरात्मा, मूर्ख, नालायक उसे साबित किया जा रहा है तो हो सकता है कि अपने सद्गुणों और सात्विक स्वभावों की संभावना पर अविश्वास करने लगे और निर्लज्जता पूर्वक दुर्बुद्धि लोगों की श्रेणी में खड़ा होकर अधिक नीचता पर उतर आवे। इसलिए गलती को भूल के नाम से ही पुकारिए, पाप या अपराध का कर्ण कटु नाम प्रयोग मत कीजिए। भूल को सुधारना आसान बताइए, त्रुटि रहित जीवन की महत्ता बताइए और उसे फिर से सुधरने के लिए प्रोत्साहित कीजिए। जिसने गलती की है वह अपने को पवित्रता से रहित और सुधरने में असमर्थ समझने लगता है, इस धारणा को धैर्य बँधाकर, गलती को छोटी बताकर, प्रोत्साहन देकर, जैसे भी बन सके दूर करना चाहिए। कटु वचन कहकर किसी का दिल तोड़ देना आसान है ऐसा तो एक बेवकूफ भी कर सकता है। आप का कार्य क्रम ऊँचा होना चाहिए दिल बढ़ाने का, सुधारने का सही मार्ग पर लाने का प्रयास कठिन है आप को बुद्धि को यह चुनौती दी जाती है कि वह कठिन प्रयास द्वारा उपयोगी कार्य संपादन करके अपनी महत्ता साबित करे।

किसी को हुक्म मत दीजिए कि तुम यह करो, तुम यह करो, हुक्म देने का तरीका सेना में अच्छा समझा जाता है परन्तु

सामाजिक जीवन को हम लोग सैनिकों की तरह नहीं वरन् सहयोग के साथ, भाई चारे के आधार पर व्यतीत करते हैं। इसमें हुक्म देने की पद्धति कारगर नहीं होती। वेतन भी नौकर भी यह चाहता है कि मुझे केवल मशीन का जड़ पुर्जा न माना जाय। जिस कार्य में अपना विचार समन्वित नहीं होता, जिस कार्य में अपनी निजी दिलचस्पी नहीं जोड़ता वह कार्य आधे मन से, बेगार की तरह किया जाता है। "पराया-जराया" यह कहावत मशहूर है। दूसरे के काम को ऐसे किया जाता है मानो जराया हुआ हो–जला दिया गया हो। साधारणतः हुक्म बजाने में अपनी लघुता साबित होती है और लघुता, परवशता के विरुद्ध विद्रोह की इच्छा उठा करती है। आपने देखा होगा कि छोटे बालक—जिन्हें आज्ञा पालन करने से हानि का भय नहीं होता अक्सर हुकुम उदूली किया करते हैं, उन्हें यह पसंद नहीं होता कि पराधीन की तरह आज्ञा पालन के लिए मजबूर होना पड़े। बड़ा होने पर मनुष्य लोभ या भय के कारण हुक्म बजाता है पर आन्तरिक इच्छा उसकी वैसी नहीं होती। विश्व में आज कल स्वतंत्रता की तीव्र मांग है। स्वतंत्रता के लिए मानव जाति घोर संघर्ष कर रही है, बड़ी बड़ी कुर्बानी कर रही है, आध्यात्म वादी भी मुक्ति चाहते हैं—मुक्ति या स्वतंत्रता एक ही वस्तु के दो नाम हैं। सब कोई पराधीनता से छुटकारा पाना चाहते हैं, उसे कतई पसंद नहीं करते।

आप अपना हुक्म देने की भाषा में सुधार कीजिए। जो कुछ कहना हो प्रस्ताव के रूप में कहिए, सलाह देने के रूप में कहिए, फैसला उसे स्वयं करने दीजिए। अपनी बातको इस तरह रखिए जिससे निर्णय खुद उसे ही करना पड़े और वह निर्णय वही हो जो आप चाहते हैं। "मुझे पानी पिलाओ" ऐसा आज्ञा सूचक वाक्य कहने की अपेक्षा ऐसा कहिए कि क्या आप मुझे

पानी पिला सकते हैं ?' या "क्या आप मुझे पानी पिलाने की कृपा कर सकते हैं ?" यह वाक्य प्रस्ताव के रूप में है। निश्चय ही इसका अच्छा परिणाम निकलेगा। वह उत्तर देगा–'हां,पिला सकता हूँ, लीजिए अभी पिलाता हूं।" प्रस्ताव पर निर्णय की छाप उसने खुद लगाई है इसलिए निश्चय ही अपनी बात को पूरा करने के लिए वह उस काम को शीघ्र और अच्छे ढङ्ग से करेगा। यदि हुक्म की तरह वह बात कही होती तो अनिच्छा पूर्वक वह काम होता, विलम्ब से होता, दिलचस्पी के अभाव में उसका सौन्दर्य नष्ट होजाता। इसलिए आप अपनी बात को हुक्म की भाषा में नहीं प्रस्ताव की तरह दूसरों के संमुख उपस्थित किया कीजिए, निर्णय करने का अवसर उसे ही दिया कीजिए। यदि निर्णय आपकी रुचि का न हो तो उसमें संशोधन रखिए परन्तु उसमें भी प्रस्ताव की ही भाषा काम में लाइए अन्ततः उससे वही निर्णय करा लीजिए जो बात आप चाहते हैं। इस तरीके में आज्ञा देने की अपेक्षा कुछ शब्दों का अधिक उच्चारण करना पड़ेगा पर स्मरण रखिए यह कष्ट आपके लिए कई गुना सुफल उत्पन्न करेगा।

आप जिस कार्य क्रम की ओर दूसरों को खींचना चाहते हैं उसकी तीव्र चाह उत्पन्न करिए। उसे यह बताइए कि नवीन कार्य पुराने कार्य की अपेक्षा अधिक लाभदायक है। इन्द्रिय असंयम बुरा है इतना कह देने मात्र से काम न चलेगा यदि किसी को ब्रह्मचर्य के पथ पर अग्रसर करना चाहते हैं तो स्वस्थ और सुन्दर ब्रह्मचारियों का उदाहरण सामने उपस्थित करिए और स्पर्धा उत्पन्न कीजिए कि वह भी ऐसा ही भरे हुए गुलाब से चहरे का सौन्दर्य प्राप्त करे, शरीर को सुडौल, बलवान और निरोग बनावें। इन लाभों की ओर जितना ही आकर्षित किया जा सकता है उतना ही वह ब्रह्मचर्य पर दृढ़ता पूर्वक आरूढ़

होजायगा। काम करना कोई पसंद नहीं करता, सब चाहते हैं बैठे ठाले बिना मिहनत किये चैन से गुजरती रहे, परिश्रम का अप्रिय काम करने के लिए तब प्रेरणा मिलती है जब उससे अच्छा फल मिलने की आशा होती है। जोखिम से भरे हुए, खतरनाक और दुस्साध्य कामों का भार विशेष लाभ की आशा से उठाया जाता है। इसलिए आप जिस कार्य के लिए दूसरों को तैयार करना चाहते हैं उसे समझाइए कि इसमें कौन कौन लाभ मिल सकते हैं। निकृष्ट कोटि के चोरी, व्यभिचार, ठगी आदि कामों के लाभ बहुत ही निकट और प्रत्यक्ष होते हैं इसलिए उनकी ओर लोग आसानी से ढुल जाते हैं। सच्चे कोटि के, सात्विक, ईमानदारी सचाई, प्रेम, न्याय युक्त कार्यों के लाभ उतने निकट या प्रत्यक्ष नहीं होते तथा उनमें श्रम भी अधिक पड़ता है। यदि दूसरों को इस प्रकार के कष्ट साध्य कार्यों में प्रवृत्त करना है तो उन कार्यों के द्वारा प्राप्त होने वाले सुखों, लाभों और उत्तम परिणामों को विस्तार पूर्वक वर्णन करिए। उदाहरण, अनुभव, तर्क और परिणाम द्वारा इन लाभोंको इस प्रकार उपस्थित करिए कि सिनेमा के चित्र की तरह वह सब बातें उसके नेत्रों में घूम जावें, हृदय के अन्तः पटल पर भली भांति अङ्कित होजावें।

तीव्र चाह उत्पन्न करना, किसी कार्य की ओर आकर्षित करने का सबसे प्रभावशाली तरीका है। अमुक कार्य भला है, अमुक बुरा है. अमुक पुण्य है, अमुक पाप है, इतना कहदेने मात्र से कुछ प्रयोजन सिद्ध नहीं होता। साधारण बुद्धि के मनुष्यों को भय और लोभ इन दो ही तत्वों के कारण कार्य करने की प्रेरणा मिलती है। लाभ के लोभसे प्रवृत्ति होती है और भय से निवृत्ति होती है। जिस काम को करने से दूसरे को रोकना चाहते हैं उसके करने में जो भय, आपत्ति हानि अनिष्ट उत्पन्न होने की

आशङ्का है उसे भली प्रकार हृदयङ्गम कराइए, वेश्या गमन की ओर जिसकी प्रवृत्ति है उसे उपदंश होने के भय से भली भांति भयभीत कर देने पर उस कुकर्म से रोका जा सकता है। उपदंश जनित कष्ट, बदनामी, क्रिया शीलता का अन्त, भोगों से बिलकुल वञ्चित होजाना, धन नाश यदि यह सब भय और आशङ्कायें उस व्यक्ति के मनमें बिठाई जा सकें तो निस्संदेह उसका कुमार्ग गमन रुक जायगा। दंड देकर, प्रतिबंध लगाकर, या बल पूर्वक रोकने की अपेक्षा यह उत्तम है कि जिस मार्ग से किसी को रोकना चाहते हैं उसके मनमें तत्संबंधी हानि और आशङ्काओं का मूर्तिमान चित्र खड़ा करें और उसे स्वयं ही वह कार्य बन्द करने का निर्णय करने दें। किसीको एक कार्य से हटाकर दूसरे कार्यपर लगानेका प्रश्नयदि कभी आपके सामने आवे तो नये कार्य के लाभों का विशद वर्णन करके उस ओर दिलचस्पी पैदा करने तथा पुराने कार्य की हानियों का मूर्तिमान चित्र बनाकर भयभीत करने का प्रयत्न किया कीजिए। जो लोग विवेक और विनय से नहीं समझते उनकी चेतना अभी निर्बल है और उस पर लोभ एवं भय द्वारा प्रभाव डालना ही संभव है। पशु को घास दिखाकर या लाठी का भय दिखाकर ही कहीं ले जाया जासकता है, अल्प विवेक वाले लोगों को आप भी इन्हीं साधनों से प्रभावित करके उत्तम और उचित मार्ग पर ले चलने का प्रयत्न किया कीजिए।

मानव मनोवृत्तियों के सुयोग्य अन्वेषक डेल कारनेगी ने एक बहुत ही उत्तम शिक्षा दी है। वे कहते हैं कि—"यदि आप मधु इकट्ठा करना चाहते हैं तो मक्खियों के छत्ते को ठोकर मत मारिए।" जिन लोगों से संबंध जारी रखे बिना काम नहीं चल सकता, जिनके द्वारा आपकी आजीविका चलती है, ऐसे संबंधी तथा ग्राहकों को अकारण क्रुद्ध मत कीजिए। एकान्त में, अत्यंत

शान्ति पूर्वक, हानि लाभ का दिग्दर्शन कराते हुए गलती करने वाले को आसानी से समझाया जा सकता है, इसमें सुधरने की बहुत कुछ संभावना रहती है। इसके विपरीत सब के सामने हुई आलोचना करने से बुराइयों में सुधार होना तो दूर उलटे वैर विरोध तथा दुराग्रह की जड़ जम जाती है।

कई आदमियों को बेकार बहस करने की आदत पड़ जाती है। यह आलोचना से भी बुरी बात है। आलोचना में अपना मन तो भी हलका है पर विवाद में वह प्रयोजन भी सिद्ध नहीं होता। आप बहस में कभी भी जीत नहीं सकते। दूसरा आदमी अपनी हेटी होते देखता है तो अपनी गलती महसूस कर लेने पर भी उसी पर अड़ जाता है विवाद से लाभ उठाने का सर्वोत्तम मार्ग यह है कि बहस में न पड़ा जाय। जो बात आप कहना चाहते हैं उसे इस ढङ्ग से कहिए जिसमें दूसरे की हेटी होने का प्रश्न उपस्थित न हो। अपने से भिन्न मत रखने वाले के विचारों को भली प्रकार समझने का प्रयत्न करिए। आरम्भ में उसके मत का समर्थन करने योग्य कोई मार्ग ढूंढिए जिससे कि उसका समर्थन करने, प्रशंसा करने, का अवसर मिल जाय, तदुपरान्त अपने मत की पुष्टि इस प्रकार कीजिए जिससे वर्तमान परिस्थिति में आपके विचार ही उपयोगी प्रतीत हों। विपक्षी के विचारों का समर्थन किसी भिन्न अवसर या पूर्व कालीन परिस्थितियों के संबंध में करना चाहिये और अपने मत को वर्तमान काल के उपयुक्त सिद्ध करना चाहिये। जैसे कि विरोधी यह कहता है कि बाल बिवाह करना उचित है। तो आप एक दम उस पर बिगड़ खड़े मत हूजिये और उसके विचारोंका उग्र खंडन करने न लग जाइये ऐसा करने से अपनी हेटी के भय से वह अपनी बात पर अड़ जायगा और उससे व्यक्ति-गत प्रेम रखने वाले श्रोता लोग उसे जिताने के लिये उसी के मत का समर्थन

दलबन्दी के रूप में करेंगे। इस प्रकार वह विवाद दलबन्दी का रूप धारण कर लेगा, तथा परिणाम लड़ाई झगड़े के अतिरिक्त और कुछ न निकलेगा।

आप ढूंढ़िए कि विरोधी का मत भी क्या किसी अवसर के लिये ठीक हो सकता है या ठीक है? ढूंढने पर पता चलेगा कि यवन शासन काल में जब कि सुन्दर लड़कियों की रक्षा कठिन होती थी, भट्टाचार्य ने शीघ्रबोध बनाकर बाल विवाह की व्यवस्था प्रचलित कराई। उस समय के लिए यह बहुत ही सुन्दर, सामयिक धर्म रक्षा का कार्य था। इस बात को भली प्रकार प्रशंसात्मक शब्दों में प्रकट करिये भट्टाचार्य की, शीघ्रबोध की, जी खोलकर प्रशंसा कीजिये जिससे विरोधी को अपनी विजय का संतोष होजाय और आपके प्रति कृतज्ञता एवं सद्-भावना की वृत्ति उसके मन में उपज आवे. अब इसी सहानुभूति का लाभ उठाने योग्य अवसर आपके हाथ में आता है, बहस जीतने का ठीक यही समय है। अब आप तर्क और प्रमाणों के साथ यह साबित कीजिये कि आज की परिस्थिति में बड़ी उम्र के बच्चों का विवाह करना क्यों उचित है। तर्क में बड़ी उम्र के विवाह से लाभ और छोटी उम्र के विवाह से हानि होने का दिग्दर्शन करना चाहिये। उदाहरणों में बाल विवाह के कारण होने वाली हानियों की कोई दर्द नाक घटनाएं ऐसी भावुक भाषा में वर्णन करनी चाहिये जिससे सुनने वालों का दिल उमड़ पड़े। कुछ उदाहरण ऐसे भी होने चाहिये जिससे अपनी हेटी होने के कारण किसी अन्य वर्ग के प्रति क्रोध उत्पन्न होता है। बच्चों की मृत्यु अधिक होती है इसलिये बालिकाओं का अधिक संख्या में विधवा होना स्वाभाविक है। अल्पायु में दाम्पत्ति जीवन का उपभोग करने से वर बधू दोनों ही कमजोर एवं अनेक रोगों के शिकार होजाते हैं उनकी संतानें भी अल्पजीवी, निर्बल

तथा रोग-ग्रस्त होती हैं। यह विधवा होने, निर्बल रोग ग्रस्त बनने, अल्पायु संतान की परेशानियां भुगतने के दर्दनाक चित्र यदि भावुकता के साथ विस्तार पूर्वक उपस्थित कर सकें और सुनने वाले का दिल हिला सकें तो समझ लीजिए कि आपने विवाद का उद्देश्य पूरा कर लिया बहस में विजय प्राप्त करली।

अपने पक्ष का समर्थन करते हुए दर्द नाक उदाहरण रखकर विपक्षियों के दिव्य दया तत्वको उभारने का प्रयत्न करिए साथ ही उनकी वीरता को चुनौती देकर जागृत कीजिए, विधवाओं को बहका कर विधर्मी गुण्डे किस प्रकार उड़ा लेजाते हैं, किस प्रकार हमारी बहिन बेटियों की दुर्गति करते हैं, उन्हीं विधवाओं की संतान किस प्रकार अपनी जाति के साथ घोर शत्रुता पूर्ण बर्ताव करती है। अथवा विधवा की सुसराल वाले किस प्रकार नाना विधियों से उस पर अत्याचार करते हैं, उन अत्याचारियों, बहकाने वाले गुण्डों के प्रति रोष उत्पन्न करने वाली भाषा का प्रयोग करके विपक्षी की अन्याय विरोधिनी-वीरता पूर्ण भावनाओं को सतेज करना चाहिए। दया के उभाड़ और वीरता के आवेश से एक ऐसी तरङ्ग उत्पन्न होती है जो मनुष्य की विचार धारा को अपनी ओर आकर्षित किये बिना नहीं रहती। आप विपक्षी को अपने मत का बनाना चाहते हैं तो उसी आकर्षक तरङ्ग को उसमें उत्पन्न करने का प्रयत्न कीजिए कड़ुई दांता कटकट से कुछ प्रयोजन सिद्ध नहीं होता। तीव्र खंडन करके, परास्त करके, नीचा दिखाकर, अपना सिक्का जमाना उस समय उपयोगी होता है जब अन्य द्वार रुद्ध होजांय, कोई जड़ बुद्धि मूर्ख, अनावश्यक रूप से सत्कर्म में विघ्न की तरह अड़ बैठे तो उसकी हिमाकत की धज्जियाँ उड़ा देने को भी विवश होना पड़ता है पर ऐसे अवसर बहुत ही कम आते हैं। जिनसे प्रतिदिन आपको बहस करनी पड़ती है उनमें से अधिकांश

ऐसे होते हैं जिनके लिए उस शास्त्र का उपयोग करने की कुछ भी आवश्यकता नहीं है। जहां गुड़ देने से काम चल सकता है वहां जहर देने का अप्रिय कार्य क्यों किया जाय? जो समझाने से ही मान सकता है उससे लड़ने में शक्ति का अपव्यय क्यों किया जाय?

कठिनता से आसानी की ओर चलाना यह मनुष्य की एक चिर प्रवृत्ति है। वैज्ञानिक आविष्कारों पर सर्वत्र बहुत जोर दिया जा रहा है, यात्रा को सरल बनाने के लिए रेल, संदेश भेजने के कार्य को सरल बनाने के लिए तार का आविष्कार हुआ। जितने भी यंत्र बन रहे हैं उनके द्वारा कठिन कार्यों को सरल बनाया जा रहा है। कठिनता से बचकर आसानी की ओर चलने की इच्छा सब श्रेणी के लोगों में एक समान मौजूद होने के कारण वैज्ञानिक आविष्कारों की खूब उन्नति हुई, जनता ने उन्हें खूब पसंद किया और पूरा पूरा सहयोग दिया। यही कारण है कि उनका इस कदर विकाश हुआ है कि वर्तमान युग 'यंत्र युग' कहलाने लगा।

व्यवहारिक जीवन में भी यही इच्छा महत्व पूर्ण कार्य करती है। आसान काम की ओर लोग झट मुड़ जाते हैं और कठिन को देखकर कन्नी काटते हैं। कई बार भ्रमवश ऐसा होता है कि सरल कामों को कठिन समझकर उन्हें छोड़ दिया जाता है और कठिन कामों को सरल समझकर अपना लिया जाता है। उत्तम काम स्वभाविक, उचित और हानि रहित होने के कारण वस्तुतः बहुत सरल होते हैं उनमें उतनी जोखिम, बनावट चालाकी का प्रयोग नहीं करना पड़ता जितना अनुचित कार्यों में करना पड़ता है। उचित कामों का लाभदायक होना निर्विवाद है और अनुचित कार्यों में हानि की आशङ्का सदैव बनी रहती है अस्वाभाविक होने के कारण उनके लिए प्रयत्न भी असाधारण

करना पड़ता है। सच बोलना कुछ भी कठिन नहीं है, जो बात जैसी है उसे वैसी ही कह देने में कुछ भी झंझट नहीं करना पड़ता परन्तु झूठ बोलने और उसे सच साबित करने में अनेक बाधा हैं, परिश्रम भी अधिक है। इतना होते हुए भी न जाने क्यों यह धारणा लोगों के मनमें घर कर गई है कि उत्तम मार्ग पर चलना, उचित कार्य करना, धर्म को अपनाना कठिन है, इसमें कोई बिरले ही सफल हो सकते हैं, पर सचाई इसके बिलकुल विपरीत है। जैसा कि भोजन करना, पानी पीना, सांस लेना, हँसना बोलना, सरल है वैसा हो उचित मार्ग पर चलना भी आसान है। स्वाभाविक, सच्चे, उचित, धर्म सम्मत कार्य सदैव सुगम होते हैं उन में अपेक्षाकृत बहुत ही कम कठिनाई होती है।

आप जो कार्य करने के लिए दूसरों से कहें उसे आसान बताइए। लोगों को यह विश्वास कराइए कि इसमें अधिक सरलता रहेगी और कठिनाई कम हो जायगी। अपने कार्य क्रम पर किसी को सहमत करने के लिए उसे यह विश्वास करना आवश्यक है कि यह, असंभव, दुस्साध्य बिरले शूरवीरों के करने योग्य नहीं वरन् बहुत ही सरल, पूर्णतया संभव और साधारण मनुष्य से पूरा हो सकने योग्य है। अनेक व्यक्ति उस मार्ग पर चल चुके हैं और चल रहे हैं उन्हें कोई ऐसी कठिनाई नहीं उठानी पड़ी जो असाधारण हो। स्मरण रखिए, सरलता को टटोल कर उधर ही लोग झुकते हैं आप अपने कार्य की आसानी प्रकट कीजिए, और बताइए कि वह बिना विशेष झंझट के स्वल्प श्रम स्वल्पकाल और स्वल्प साधनों से पूरा हो सकता है। यदि आप पहले से अपने कार्य को 'तलवार की धार पर चलना' बतावेंगे, उसमें आने वाली विघ्न बाधाओं को दुस्तर बतावेंगे तो आरंभ में ही हिम्मत टूट जाने के कारण उस पथ पर चलने

के लिए कोई मनुष्य मुश्किल से ही तैयार होगा।

स्वयं कम बोलिए और दूसरों को अधिक बोलने दीजिए। आप एक घंटे अपनी बात कहकर किसी का मन उतना अपनी ओर आकर्षित नहीं कर सकते जितना कि आध घण्टा उसे अपनी बात कहने देकर कर सकते हैं। अच्छा वक्ता होनेका प्रधानलक्षण यह है कि अच्छा श्रोता बनना चाहिए। दूसरे आदमी के मन में जो विचार या गुबार भरे हुए हैं यदि आप उन्हें उगलवा लेते हैं तो उसका मन हलका हो जाता है और फिर उस पर कोई छाप बिठाना सरल होता है। किसी अलमारी में यदि कुछ नया सामान रखना चाहते हैं तो आवश्यक है कि उसमें से पुरानी भरी हुई कुछ चीजें हटादी जांय। सुनने की अपेक्षा सुनाना लोग अधिक पसंद करते हैं। सुनने वाले ऊँघते रह सकते हैं पर कहने वाला कभी ऊँघता न देखा होगा। कारण यह कि कहने वाला अपना महत्व अनुभव करता है और सुनने वाले के द्वारा उस महत्व का पोषण होता है अपनी खाज खुजाने वाला प्रिय लगता है, पैर दबाकर थकान उतार देने वाला प्रिय लगता है, इसी प्रकार अपने विचार सुनकर मन हलका कर देने वाला भी प्रिय लगता है। अपने ज्ञान, अनुभव और कल्पना को सुना कर मनुष्य ऐसा अनुभव करता है मानो एक मानसिक बोझ उतर गया।

कई व्यक्ति आरंभ में अपनी बात कहते हुए झिझकते हैं, झेंपते हैं, हिम्मत नहीं करते, परन्तु यदि प्रोत्साहन देकर उन्हें अपने अनुभव सुनाने को रजामंद कर लिया जाय, और धैर्य शान्ति तथा दिलचस्पी के साथ उनकी पूरी बात सुनलें तो आप उनके प्रिय पात्र, आत्मीयजन बन सकते हैं। समय कम हो और कुछ आवश्यक सूचना देनी हो तो बात अलग है अन्यथा यदि थोड़ी फुरसत आपके पास है तो उसका दो तिहाई भाग दूसरों

की बात सुनने में लगाइए और शेष एक तिहाई समय में अपनी बात कहिए। जब वक्ता एक विषय को समाप्त कर चुके तो नया प्रसङ्ग आरंभ करके दूसरी बात कहने को उसे प्रोत्साहित करिए, ऐसा मत सोचिए कि जिसे आप अधिक कहने का अवसर देते हैं वह आपके ऊपर अहसान प्रकट करेगा। यह आपका कर्तव्य है कि अपने बहुमूल्य अनुभव बताने के लिए उसे धन्यवाद दें और कृतज्ञता प्रकट करें पर सही बात यह है कि वह आप का कृतज्ञ होगा, आपके प्रति मन ही मन प्रेम और आदर के भाव रखने लगेगा। इसलिए परायों को अपना बनाने के लिए इस गुप्त मर्म को भली प्रकार समझ लीजिए कि दूसरों को जितना ही अधिक कहने का अवसर देंगे उतना ही उसका स्नेह प्राप्त करेंगे। आपके बहुत बकने पर वह आपको अच्छा वक्ता न मानेगा पर यदि दिलचस्पी और सहानुभूति के साथ उसकी बात सुनलेतेहैं तो आपके थोड़े कथन को ही वह बहुत महत्व पूर्ण मानेगा और उसपर विशेष ध्यान देगा। याद रखिए प्रभावशाली वक्ता वह है जो दूसरों को अधिक कहने का अवसर देता है सुनाने के लिए तैयार कर लेता है और सहानुभूति के साथ सुनता है। जो वैद्य अपने रोगी को, जो व्यापारी अपने ग्राहक को, जो कर्मचारी अपने मालिक को, इस प्रकार तैयार कर लेता है वह अधिक लाभ उठाता है, अधिक नफे में रहता है।

तीसरा पाठ

प्रशंसा और प्रोत्साहन द्वारा आत्म शक्तियों का विकसित होने दीजिए !

जैसे ही बुद्धि तत्व थोड़ा विकसित होता है वैसे ही मनुष्य प्रशंसा सुनकर प्रसन्नता अनुभव करता है और निन्दा सुनकर बुरा मानता है। छोटा बालक जिसे दुनियांदारी का बहुत अधिक ज्ञान नहीं होता 'राजा बेटा' सुनकर खुश होता है और 'भङ्गी' कहने पर नाराजी जाहिर करता है। कोई कैसा ही बुरा क्यों न हो परन्तु वह इस बात को पसंद नहीं करता कि उसकी निन्दा हो, लोग उसे बुरा कहें, दुर्गुणी या पतित बतावें। कैसा ही नीची श्रेणी का व्यक्ति क्यों न हो वह चाहता है कि मुझे अच्छा समझा जाय ऊँचा कहा जाय, सद्गुणी बताया जाय। कारण यह कि अन्तरात्मा का प्रिय भोजन प्रशंसा है वह उन तत्वों को पसंद करती है जिनके कारण प्रशंसा प्राप्त होती है। जिन कारण से निन्दा होती है वे उसकी आकांक्षा के विरुद्ध हैं इसलिए बुराई सुनकर उसे दुख होता है।

कोई बुरा व्यक्ति एक क्षण के लिए यह समझ सकता है कि मेरी जो निन्दा होती है वह झूँठी नहीं है मैं उसका पात्र हूं, जो आक्षेप आरोप मेरे ऊपर किये जा रहे हैं वे असत्य नहीं है मैं उन दुर्गुणों में व्यस्त हूं. यह मानते हुए भी वह आक्षेप लगाने वाले के ऊपर निन्दा करने वाले के ऊपर बिगड़ता है। धीरे धीरे अनुचित कार्यों का अभ्यास पड़ जाने के कारण उन्हें

सहन करता रहता है पर निन्दा सूचक शब्दों के सामने आते ही एक बड़ी अप्रिय वस्तु सामने आ खड़ी होती है। शरीर के भीतर जो दुर्गंधित मल भरा हुआ है वह तो सहन होजाता है पर यह सहन नहीं हो सकता कि उस अप्रिय वस्तु को नेत्र या नासिका के निकट उपस्थित किया जाय। कालौंच के दाग चहरे पर लग गये हों तो पता नहीं चलता पर दर्पण के सामने पहुंचते ही चित्त में एक दम विक्षोभ पैदा हो जाता है। निन्दा का भी ऐसा ही प्रसङ्ग है, उसे सुनने सहन करने के लिए लोग तैयार नहीं होते। कडुई समालोचना सुनने का साहस रखने वाला सौ पीछे एक भी मुश्किल से मिलेगा।

विपरीत परिस्थिति में होते हुए भी स्वाभाविक आवश्यकता की भूख मिटती नहीं है। मछली सूखे स्थान पर पड़ी पड़ी अरुचि कर अवसर सहन कर रही है, मूर्छित अवस्था में जीवन के शेष क्षण जैसे तैसे बिता रही है, पर यदि उस बीच में कोई उसके ऊपर थोड़ा पानी छिड़क देता है तो मछली के शरीर में एक दम चैतन्यता की बिजली दौड़ जाती है, एक नवीन आशा का उसमें सञ्चार हो जाता है और जीवन तत्व में कुछ और वृद्धि हो जाती है। यदि उसकी प्राण पूँजी एक घण्टे में समाप्त होती थी तो इस तरह पानी छिड़क छिड़ककर दो घण्टे चल सकने की संभावना रहती है। रोग ग्रस्त व्यक्ति औषधि की सहायता से अपनी पीड़ा में कुछ न्यूनता अनुभव करता है, प्रचंड धूप में चलकर आने वाले व्यक्ति को वृक्षकी छायामें थोड़ीसी शीतलता भी बहुत शान्ति देती है, बाहरी और भीतरी निन्दा की अग्नि में जलता हुआ मनुष्य जहां प्रशंसा की थोड़ी सी भी शीतलता देखता है वहीं सतृष्ण नेत्रों से देखने लगता है।

प्रशंसा प्राप्त करने के लिए लोग बहुत कुछ करते हैं, जो ... इसकी इच्छा करते हैं। बड़े आदमी खुशामदी

लोगों से घिरे रहते हैं, राजा, महाराजाओं, अमीर, उमरावों की मजलिस में जिनका प्रवेश होता है उन में सब से प्रथम गुण खुशामद, चापलूसी होता है,वे लोग हां में हां मिलाते हैं, तारीफ करते हैं उनकी मनमर्जी को देखकर बात कहते हैं फल स्वरूप बड़े आदमियों के साथ उनकी खूब पटती है, अच्छी आमदनी होती है। चारण, भाट आदि कुछ तो पेशेवर जातियां ही बन गईं जिनका एक मात्र कार्यक्रम कविताबद्ध प्रशंसा करके अपनी जीविका कमाना ठहरा। ठग लोग इस विद्या में प्रवीणता प्राप्त करते हैं दूसरे लोगों को अपनी मन मर्जी के अनुसार रजामन्द कर लेने में सबसे प्रबल हथियार के रूप में चापलूसी, प्रशंसा को ही वे काम में लाते हैं। प्रशंसा के आकर्षण को अकाट्य और अचूक देखकर लोगों ने इसे ईश्वर के लिए भी प्रयोग किये। स्तुतियां, प्रार्थनाऐं इसी प्रकार की पद्धतियां हैं जिनके अनुसार ईश्वर के गुणों का विस्तार वर्णन किया जाता है, उसकी प्रशंसा की जाती है, विष्णु सहस्रनाम, गोपाल सहस्रनाम तथा अनेक स्तोत्र पुस्तकें इसी तत्व को अपने अन्दर छिपाये बैठी हैं। भक्त समझता है कि प्रशंसा का अचूक हथियार मनुष्य के हृदय पर विजय पा सकता है तो ईश्वर पर भी वैसा ही प्रभाव करेगा अपनी तारीफ सुनकर देवताओं के दिल बे काबू होजाते हैं और अमीर उमरावों की भांति वे तारीफ करने वालों को विपुल संपदा देते हैं ऐसा विश्वास भक्त लोगों के मन में बहुत गहरा धँसा होता है।

हम यहां ईश्वर भक्ति के संबंध में कुछ विवेचना नहीं कर रहे हैं, हमारा तात्पर्य केवल यह बताने का है कि दूसरों से हम जिन जिन बातों की आशा करते हैं उनमें प्रशंसा मुख्य है। हर व्यक्ति चाहता है कि उससे संबंधित व्यक्ति उसकी विरुदावली वर्णन करें। जिव्हा को मिठाई का स्वाद अन्य छहों रसों की

अपेक्षा अधिक प्रिय होता है, स्पर्शेन्द्रिय को काम सेवन में अधिक रस आता है, कर्णेन्द्रिय को विश्व के सर्वोत्तम सङ्गीत की अपेक्षा 'अपनी प्रशंसा' अधिक रुचिकर होती है। जिव्हा इन्द्रिय और स्पर्शेन्द्रिय के भोग शरीर तक ही सीमित होने के कारण उलथे हैं हलके दर्जे के हैं परन्तु कानके द्वारा जो रस प्राप्त होता है वह गहरा और ऊँचे दर्जे का है कारण यह है कि कान का स्थानीय आनंद कुछ नहीं, प्रशंसा या सङ्गीत सुनने से कान के छेद में कोई खास हलचल नहीं होती, वरन इस छिद्र द्वारा जो तत्व ग्रहण किये जाते हैं वे चेतना शक्ति में पहुँचते हैं वहीं उस रस का भला बुरा अनुभव होता है। प्रशंसा के द्वारा जो रस प्राप्त होता है वह अन्तःकरणको तृप्त करता है उस तृप्तिका आनंद इतने ऊँचे दर्जे का होता है कि बढ़िया से बढ़िया सङ्गीत उसकी तुलना नहीं कर सकता। प्रशंसा के द्वारा मानव हृदय जितना आकर्षित एवं आन्दोलित होता है उतना और किसी प्रकार नहीं होता। जितना त्याग प्रशंसा के लिए कर सकता है और किसी निमित्त के लिए उतना नहीं कर सकता।

आध्यात्मवाद के पथ पर अग्रसर होने वाले साधकों का कर्तव्य है कि जिस पदार्थ को अत्यधिक आवश्यकता प्रत्येक मनुष्य अनुभव कर रहा है, जिसकी प्यास उसे बेचैन किये हुए है उसे उस तक पहुंचाने का प्रयत्न करे। बहुत से धर्मात्मा प्यासे पथिकों की तृष्णा दूर करने के लिए प्याऊ लगवाते हैं, कुआँ बावड़ी बनवाते हैं, निराश्रितों को ठहरने के लिए धर्मशालाऐं बनवाते हैं, रोगियों की चिकित्सा के लिए औषधालय खुलवाते हैं, भूखे लोगों को भोजन देने के लिए सदावर्त लगवाते हैं यह उदारता और प्रेम पूर्ण कार्य इसलिये किये जाते हैं कि भूखे, प्यासे, निराश्रित, रोगीजन अपने अभावों को इन स्थानों पर पूरा कर सकें, इसी प्रकार लोग अपने जरूरत को, तृषा को, शान्त

कर सकें। ऐसे सत्कर्मों से उन दानी महानुभावों को पुण्य फल की प्राप्ति होती है। अतृप्तों को तृप्त करना सचमुच धर्म कार्य है।

आपके पास पैसा न हो और कुआं, प्याऊ, धर्मशाला, बगीचा, औषधालय, सदावर्त की व्यवस्था न कर सकें तो कुछ हर्ज नहीं, धन सञ्चय करके इन धन साध्य कार्यों को पूरा कर सकना संभव न हो तो उदास होने की कोई आवश्यकता नहीं है। आप भौतिक धर्म स्थ.नों की अपेक्षा आत्मिक धर्मस्थान आसानी से बना सकते हैं और वह इतना उपयोगी हो सकता है जिसकी किसी से तुलना न हो सके। यह धर्म कार्य अपने ढङ्ग का अनोखा है और अत्यंत उच्चकोटि का होने के कारण असा धारण परिणाम उपस्थित करने वाला है।

आप अपने को प्रशंसक बना लीजिए। दूसरों में जिन सद्‌गुणों को देखें जिन सद् वृत्तियों को विकसित होता हुआ पावें उन्हें और अधिक उन्नत करने के लिए प्रोत्साहित करें। मुरझा कर सूख जाने की तैयारी में खड़े हुए पौदे जलसे सिंचित होते ही दूसरे ढङ्ग के हो जाते हैं उनकी गति विधि तुरन्त ही बदल जाती है, कुम्हलाये हुए पत्ते सतेज दिखाई पड़ने लगते हैं। प्रशंसा का जल ऐसा ही जीवन दाता है सूखे हुए अन्तः-करणों में वह आशा और उत्साह का सञ्चार करता है। वर्षा ऋतु में पौदे बल्लियों बढ़ जाते हैं, मेघों का स्नेह बूँद पीकर बनस्पति जगत का रोम रोम तरङ्गित होने लगता है। वर्षा ऋतु में मखमल की सी हरियाली चारों ओर छा जाती है, ऊपर भूमि भी सुशोभित दीखती है चट्टानों का मैल धुल जाने से उनकी स्वच्छता निखर जाती है। आप यदि प्रशंसा द्वारा दूसरों के मुरझाये हुए हृदयों को सींचना आरंभ करदें. कानों की राह आत्माओं को अमृत पिलावें तो ठीक वैसा ही कार्य करेंगे जैसा कि परोपकारी मेघ किया करते हैं। तन वे समान जलता हुआ

भूतल मेघ माला का स्नेह पीकर तृप्त होता है और वनस्पतियों का हरा भरा आशीर्वाद उगलता है। परोपकार और आशीर्वाद के संमिश्रण से बड़ी ही शान्तिदायक हरियाली उपज पड़ती है और विश्व की असाधारण सौन्दर्य वृद्धि करती है। क्या आपको यह कार्य पद्धति पसंद है ? यदि है तो अपने चारों ओर बिखरे पड़े हुए असंख्य अतृप्त और अविकसित हृदयों को अपनी प्रोत्साहन मयी मधुर वाणी से सींचना आरंभ कर दीजिए वे हरे भरे स्वच्छ, प्रफुल्ल होजायँ। उनके सद्गुण वर्षा की वनस्पति की तरह तीव्र गति से बढ़ने और फैलने फूटने लगें।

यह बहुत ही उच्च कोटि का पुनीत धर्म कार्य है अन्तः करण की चिर तृषा इससे तृप्त होती है, उन्नति के रुद्ध स्रोत खुलते हैं, अविकसित सद्वृत्तियां प्रस्फुटित होती हैं, छिपी हुई योग्यताऐं जागृत होती हैं और निराशा के अन्धकार में आशा का दीपक एक बार पुनः जगमगाने लगता है। निन्दा और भर्त्सना ने अनेक उन्नतमना लोगों को निराश, कायर, भयभीत और निकम्मा बना दिया, हम ऐसे लोगों को जानते हैं जो व्यक्तिगत रूप से उन्नतिशील थे, उन में अच्छी योग्यताओं के अंकुर मौजूद थे पर उनका संपर्क बड़े दुर्बुद्धि संरक्षकों के साथ में रहा। जरा जरा सी बात पर झिड़कना, मूर्ख बताना, नालायकी साबित करना, अयोग्यता का फतवा देना यह ऐसे कार्य हैं जिनके द्वारा माता पिता अपने बालकों की, मालिक अपने नौकरों की गुरुजन अपने शिष्यों की आशा कली को बेदर्दी के साथ कुचल डालते हैं। निरंतर भर्त्सना करते रहने से न तो कुछ सुधार होता है और न कोई उन्नति होती है, केवल इतना ही परिणाम निकलता है कि वह अपने बारे में निराशा जनक भावनाऐं धारण करता है, अपनेको अयोग्य मानने लगता है उसका दिल बैठता जाता है और धीरे २ निर्लज्ज होकर उसी अवमति के ढांचे में ढलता जाताहै।

जिस व्यक्ति में दूसरों को निराश करने की, जरा जरा से दोषों को बढ़ा चढ़ा कर कहने की, झिड़कने की, निन्दा करने की निरुत्साहित करने की आदत है वह सचमुच बड़ा भयङ्कर है। व्याघ्र आदि हिंसक जन्तु जिस पर आक्रमण करते हैं उसे क्षण भर में फाड़ कर खा जाते हैं परन्तु गिरने वाले निन्दा सूचक शब्दों का प्रयोग करने का जिसे अभ्यास हो गया है उसकी भयङ्करता व्याघ्र से अधिक है, सूखा मसान बालकों का कलेजा चूस कर उसे ठठरी बना देता है इस प्रकार निन्दा सूचक वाक्य प्रहारों से भीतर ही भीतर दूसरे का कलेजा खाली हो जाता है, उन्नति और उत्साह के सारे तत्व सूख जाते हैं, इन मानव व्याघ्रों द्वारा वाक्य बाणों से अशक्त बनाया हुआ व्यक्ति जीवन भर अवनति के गर्त में ही पड़ा रहता है, बिरले शूरवीरों को छोड़कर इस प्रकार निःसत्व हुए लोग प्रायः गिरी हुई दशा में ही अपनी सांसें पूरी करते हैं।

प्रशंसा और प्रोत्साहन में वह जादू है जो मनुष्य क्या देवताओं को भी शक्ति प्रदान करने की क्षमता रखता है। बानर सीता को ढूंढने जाते हैं, समुद्र तट पर सब लोग बैठ जाते हैं पार करने की किसी की हिम्मत नहीं पड़ती. तब जामवन्तजी हनुमान को प्रोत्साहित करते हैं। कुछ क्षण पहले जो हनुमान अपने को असमथ समझ रहे थे वे ही अब उत्साह पूर्वक उठ खड़े होते हैं और समुद्र पार करने के असंभव प्रतीत होने वाले काम को पूरा करते हैं। इतिहास में उज्ज्वल रत्न की तरह चमकते हुए अनेक रत्नों का उन्नति एवं महान कार्य संपादन करने का श्रेय ऐसे लोगों को है जिन्होंने बढ़ावा दे देकर उन्हें नर से नाहर बनाया। उद्दंड, अवांछनीय स्वभाव के दुबले पतले नाटे मरहट्टा बालकको सिंह शिवाजी बनाने वाले समर्थ गुरु रामदास थे जिन्होंने प्रोत्साहित करके उसे हिन्दू धर्म की लाज रखने वाला

बना दिया। यदि आप प्रशंसा करने और प्रोत्साहन देनेकी नीति को अपना लेते हैं तो इसके द्वारा अनेकों व्यक्तियों को ऊँचा उठाने में, आगे बढ़ाने में, सहायक होते हैं। हो सकता है कि कोई क्रियाशील व्यक्ति आपके द्वारा प्रोत्साहन पाकर उन्नति के प्रकाश पूर्ण पथ पर चल निकले और एक दिन ऊँची चोटी पर जा पहुंचे। क्या आपको उसका श्रेय न मिलेगा? क्या उस महान कर्म साधना में आप पुण्य के भागी न होंगे?

झूंठी चापलूसी करके किसीका अनुचित अहङ्कार जागृत करना ठीक नहीं और न यही मुनासिब है कि दुष्ट दुरात्माओं के दुष्कर्मों का विरोध न किया जाय। अवश्य ही डर से, स्वार्थ भावना से, किसी को ठगने की इच्छा से, झूँठी खुशामद नहीं करनी चाहिए और न अन्यायी के दुष्कर्मों का भंडा फोड़ करने में झिझकना चाहिए। ऐसे लोगों का विरोध करना उचित है। किन्तु यह अपवाद है, ऐसे अवसर जीवन में बहुत ही थोड़े आते हैं। अत्यंत उग्र क्रूर कर्मा, जिनके सुधरनेकी संभावना नहीं रही है वे ही विरोध के पात्रहैं अन्यथा साधारण वृत्ति के लोगों में सद्गुण दिखाई पड़ते हैं उन्हें प्रोत्साहित किया जाय तो वे इतने बढ़ सकते हैं जिससे विरोधी दुर्भाव ढक जाय। जो आदमी चोरी करता है उसमें किसी हद तक ईमानदारी का भी माद्दा होता है यदि आपमें इतनी योग्यता हो कि उन ईमानदारी के अंशों को ऊँचा उठा सकें तो निश्चय ही उनके प्रभाव से चोरी की आदत दब जायगी और वह दुर्गुण समाप्त प्राय होजायगा।

———

चौथा पाठ

कठिन परिस्थितियों में भी धैर्य को कायम रखिए !

जीवन को एक प्रकार का खेल समझिए। खिलाड़ी की तरह पार्ट अदा करिए और पल्ला झाड़ कर अलग होजाइए। वैराग्य, निष्काम कर्म, अनाशक्ति, की योग शास्त्र में बार बार शिक्षा दी गई है, यह कोई अव्यवहारिक या काल्पनिक विषय नहीं है वरन् कर्म शील मनुष्यों का जीवन मंत्र है। जिन लोगों पर अत्यंत कठोर उत्तरदायित्व रहते हैं, जिनके ऊपर असंख्य जनता के भाग्य निर्माण का भार है, उनके सामने पग पग पर बड़े बड़े कठिन, पेचीदा, दुरुह और घबरा देने वाले प्रश्न आते रहते हैं, इतने अधिक और भारी काम सम्मुख उपस्थित रहते हैं जिन्हें देखते ही साधारण मनुष्यों के छक्के छूटते हैं, कठिनाई ऐसी ऐसी भयंकर आती हैं जिनकी पर्वत को उंगली पर उठानेकी समता दी जा सकती है। वे कर्मशील उन कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करते हुए महान कार्यों को पूरा करते रहते हैं।

वर्तमान काल में महायुद्ध अत्यंत प्रबल वेग से चल रहा है, इसमें युद्ध रत राष्ट्रों के कर्णधारों तथा प्रधान सेनापतियों के ऊपर असाधारण उत्तदायित्व का भार है। चर्चिल, रूजवेल्ट, चांगकाई शेक, स्टेलिन,हिटलर, मुसोलिनी, टोजो प्रभृति व्यक्तियों को एक साथ कितने कार्य करने पड़तेहैं कितनी पेचीदा गुत्थियां सुलझानी पड़ती हैं, कितने नित नये संघर्षों का सामना करना

पड़ता है। वे अपने काम को भली प्रकार करते हैं, न तो बीमार पड़ते हैं, न बेचैन होते हैं, न घबराते हैं। रात को पूरी नींद लेते हैं, आमोद प्रमोदों में भाग लेते हैं, हँसते खेलते हैं, उत्सव भोजों में शरीर होते हैं, यदि मामूली आदमी पर इतना कार्य भार आपड़े तो वह चिन्तासे व्याकुल होकर खाना पीना भूल जायगा, फिक्र के मारे नींद न आवेगी हँसना बोलना न सूझेगा, चिड़चिड़ाने लगेगा, सूख सूख कर कांटा होजायगा और संभव है कि थोड़े ही दिनों में मर खप जाय। परन्तु जो लोग कर्मशील हैं एक एक मिनट जिनको मशीन के पुर्जे की तरह काम करते हुए बीतती है वे न तो बीमार पड़ते हैं और न कमजोर होते हैं वरन् पहले की अपेक्षा भी अधिक स्वस्थ्य होते चले जाते हैं।

एक हम हैं जो मामूली सी दो चार कठिनाइयां सामने आने पर घबरा जाते हैं, चिन्ता के मारे बेचैन बने रहते हैं। यह मानसिक कमजोरी है आत्मबल का अभाव है, नास्तिकता का चिन्ह है। मानसिक संतुलन खोकर घबराहट में पड़ जाना अपनी शक्तियों को नष्ट भ्रष्ट कर देना है। बेचैन मस्तिष्क ठीक बात सोच नहीं सकता उसमें उचित मार्ग ढूंढने योग्य क्षमता नहीं रहती. आपत्ति से छुटकार पाने के उपाय तलाश करने के लिए गम्भीर स्थिर और शान्त चित्त की आवश्यकता है पर उसे पहले ही खो दिया जाय तो जल्दबाजी में सिर्फ ऐसे उथले और अनुचित उपाय सूझ पड़ते हैं जो कठिनाई को और भी अधिक बढ़ाने वाले होते हैं। जाल में फँसा हुआ पक्षी जितना ही फड़फड़ाता है उतना ही और अधिक फँसता जाता है, उसके बंधन उतने ही अधिक कड़े होते जाते हैं।

कार्य की अधिकता, असुविधा या चिन्ता का कारण उपस्थित होने पर आप उसको सुलझाने का प्रयत्न करिए। इनमें सब से प्रथम प्रयत्न यह है कि मानसिक संतुलन को कायम

रखिए, चित्त की स्थिरता और धैर्य को नष्ट न होने दीजिए। घबराहट तीन चौथाई शक्तिको बरबाद कर देती है, फिर विपत्ति से लड़ने के लिए एक चौथाई भाग ही शेष बचता है इतने स्वल्प साधन की सहायता से उस भारी बोझ को उठाना सरल नहीं रहता। कहते हैं कि विपत्ति अकेली नहीं आती, उसके पीछे और भी बहुत से झंझट बँधे चले जाते हैं कारण यह है कि चिन्ता से घबराया हुआ आदमी अपना मानसिक स्वस्थता खो बैठता है और जल्दबाजी में इस प्रकार का रवैया अख्तियार करता है जिसके कारण दूसरे काम भी बिगड़ते चले जाते हैं तथा एक दूसरे के बाद दूसरे अनिष्ट उत्पन्न होते जातेहैं। यदि मानसिक स्थिति पर काबू रखा जाय चिन्ता और बेचैनी से घबरा न जाया जाय तो वह मूल कठिनाई भी हल हो सकती है और नई शाखा प्रशाखाओं से भी सुरक्षित रहा जा सकता है।

यह जीवन खेल या नाटक की तरह मनोरंजन का स्थान मानना चाहिए। अपने कर्तव्यका उत्तरदायित्व पूर्ण रूपसेअनुभव करिए किन्तु घटनाओं या कार्यों का इतना प्रभाव अपने ऊपर मत पड़ने दीजिए कि चित्त चंचल एवं विक्षुब्ध हो उठे, दैनिक कार्य छूट जांय, प्रसन्नता नष्ट हो जाय या नींद में विक्षेप पड़ने लगे। खेल में बार बार जीत होती है बार बार हारना पड़ता है, कभी आशा का संहार होता है कभी निराशा दिखाई पड़ती है, यह सब होते हुए भी खिलाड़ी खेलता रहता है, उतार चढ़ाव की स्थितियों को देखता है, उसको बर्दाश्त करता है पर इतना प्रभावित नहीं होता कि चिन्ता की शान्ति खो दें, शोक से रोने लगे, चिन्ता से घबरा जावे या हर्ष से नाच उठे, खेल के समय भावों का थोड़ा सा उभाड़ होता है पर घर आते ही खिलाड़ी पल्ला झाड़ कर अलग होता है, उस हार जीत को भूल जाता है और शान्ति पूर्वक चादर तानकर सोता है।

ऐसा ही दृष्टिकोण व्यवहारिक जीवन में रहना चाहिए। ईश्वर की इच्छा, प्रकृति की प्रेरणा, संचित संस्कारों के कर्म फल के अनुसार प्रिय अप्रिय प्रसङ्ग हर किसी के सामने आते हैं, उनका आना रोका नहीं जा सकता, भगवान रामचन्द्र योगेश्वर कृष्ण तक को विपत्तियों से छुटकारा न मिला। होतव्यता कभी कभी ऐसी प्रबल होती है कि प्रयत्न करते हुए भी उनसे बचाव नहीं हो सकता। ऐसे अवसरों पर मूर्ख लोग अपना खून सुखाते हैं, छाती पीटते हैं रोते झींकते हैं और मर मिटते हैं, बुद्धिमान लोग जीवन की वास्तविक स्थिति पर नवीन विचार धारा से विचार करते हैं, जो होना था हुआ, या होना होगा, घबराने से कुछ लाभ नहीं वरन् दूनी हानि है, कार्य नष्ट हुआ, साथ ही शरीर भी नष्ट करना, यह कोई समझदारी का काम थोड़े ही है। इसलिए विवेकवान अपने मस्तिष्क पर काबू करते हैं और खिलाड़ी की भांति बड़ी से बड़ी कठिनाईको छोटी करके देखते हैं। इसका अर्थ उत्तरदायित्व की उपेक्षा करना नहीं वरन् यह है कि कठिनाई से पार होने के लिए शक्ति को सुरक्षित रखा जाय, उसका अपव्यय न होने दिया जाय। चिन्ता और शोक की घबराहट में सिवाय बर्बादी के लाभ कुछ नहीं है इसलिए इस मानसिक दुर्बलता को परास्त करने का शक्ति भर प्रयत्न करना चाहिए।

आप संसार के कर्मनिष्ठ महापुरुषों से शिक्षा ग्रहण कीजिए, अपने को धैर्यवान् बनाइए, काम को खेल की तरह करिए, कठिनाइयों को मनोरंजक का एक साधन बना लीजिए। अपने मन के स्वामी आप रहिए, अपने घर पर किसी दूसरे को मालिकी मत गांठने दीजिए, चिन्ता शोक आदि शत्रु आपके घर पर कब्जा जमाकर, मस्तिष्क पर अपना काबू करके आपको दीन दरिद्र की भांति दुखी करना चाहते हैं और शान्ति

तथा स्वास्थ का हरण करके व्यथा वेदनाओं की चक्कीमें पीसना चाहते हैं इनसे सावधान रहिए। यदि शत्रुओं को आपके मस्तिष्क पर कब्जा कर लेने में सफलता मिल गई तो आप कहीं के न रहेंगे। भ्रम और अज्ञान के बन्दीगृह में पड़े पड़े बुरी तरह सड़ते रहेंगे और स्वनिर्मित नरक में अपने आप सुलगाई हुई अग्नि से स्वयमेव जलते रहेंगे, यह बहुत ही भद्दी और दुखदायी स्थित होगी।

जब कि संसार में अनेक लोग आप से हजारों गुनी कठिनाइयों का सामना करते हैं अनेक गुना अधिक परिश्रम करते हैं, अनेक गुने घात प्रतिघातों को सहते हैं फिर भी हँसते रहते हैं और स्वास्थ्य बढ़ाते रहते हैं तो क्या कारण है कि आप जरा सी घर गृहस्थी की समस्या के कारण, थोड़े से नुकसान के कारण, साधारण से कष्ट के कारण इतने घबराते हैं? भविष्य की काल्पनिक आशङ्का के कारण बेतरह हड़बड़ाये रहते हैं? आप अकेले ही इस दुनियां में कष्ट ग्रसित नहीं हैं लाखों करोड़ों मनुष्य ऐसी ही या इनसे भी बड़ी कठिनाइयों का मुकाबिला कर रहे हैं, फिर क्यों नहीं आप उनसे शिक्षा ग्रहण करते? क्यों नहीं अपने ऊपर काबू रखते? क्यों नहीं विवेक बुद्धि को जागृत करके हानिप्रद मानसिक कमजोरी को मार कर दूर भगा देते?

गीता कहती है कि 'कर्तव्य पर आरूढ़ रहो फल को ईश्वरार्पण करदो।" इस शिक्षा से आप की घबराहट दूर होनी चाहिए। अपनी जिम्मेदारी को ईमानदारी से पूरा करना चाहिए प्रयत्न में त्रुटि न रखनी चाहिए फिर भी यदि कोई अनिष्ट उपस्थित होता है, कष्ट आता है, असफलता मिलती है तो उसे ईश्वरार्पण करिए, आपको जो करना था कर चुके, ईश्वर को जो करना है उसे वह करेगा। आपकी दृष्टि से यदि ईश्वर

गलती कर रहा है तो करने दीजिए, पड़ौसी की गलती से जैसे आप बेचैन नहीं होते उसी प्रकार ईश्वर की गलती की भी परवा मत कीजिए, वह जो गलत सही करता है आप सुलझेगा। आपके लिए संतोष करने का यह पर्याप्त कारण मौजूद है कि कर्तव्य में त्रुटि नहीं रखते अपनी जिम्मेदारी को ईमानदारी से पूरा करते।

दुनियां में हर एक के सामने अप्रिय प्रसङ्ग आते हैं ऊँचे चढ़ने वालों के सामने तो वे और भी अधिक सख्या में आते हैं, उनसे घबराने या डरने से कर्मयोग की उपासना नहीं होसकती। कर्तव्य पथ संघर्षमय है, उसमें क्षण क्षण पर बाधाऐं आती हैं और उन्हें हटाने के लिए निरंतर युद्ध करते रहना पड़ता है। आप एक बहादुर सिपाही की तरह विघ्न बाधाओं को कुचलते हुए आगे बढ़ते चलिए, जीवन को खेल समझिए, परिस्थितियों के प्रभाव से मस्तिष्क को बेकाबू मत होने दीजिए, धैर्य रखिए, भली बुरी परिस्थितियों में एक समान हँसते रहिए, मानसिक संतुलन नष्ट मत होने दीजिए, कर्मयोग का आनंद दायक सूत्र यह है कि—सदा प्रसन्न रहिए और ईश्वर को स्मरण रखिए।

❀ इति ❀

मनुष्य को देवता बनाने वाली पुस्तकें।

यह बाजारू किताबें नहीं है, इनकी एक एक पंक्ति के पीछे गहरा अनुभव और अनुसंधान है। विनम्र शब्दों में हमारा दावा है कि इतना खोज पूर्ण अलभ्य साहित्य इतने स्वल्प मूल्य में अन्यत्र नहीं मिल सकता।

(१)	मैं क्या हूं ?	।=)
(२)	सूर्य चिकित्सा विज्ञान	।=)
(३)	प्राण चिकित्सा विज्ञान	।=)
(४)	पर काया प्रवेश	।=)
(५)	स्वस्थ और सुन्दर बनने की अद्भुत विद्या	।=)
(६)	मानवीय विद्युत के चमत्कार	।=)
(७)	स्वर योग से दिव्य ज्ञान	।=)
(८)	भोग में योग	।=)
(९)	बुद्धि बढ़ाने के उपाय	।=)
(१०)	धनवान बनने के गुप्त रहस्य	।=)
(११)	पुत्र या पुत्री उत्पन्न करने की विधि	।=)
(१२)	वशीकरण की सच्ची सिद्धि	।=)
(१३)	मरने के बाद हमारा क्या होता है ?	।=)
(१४)	जीव जन्तुओं की बोली समझना	।=)
(१५)	ईश्वर कौन है ? कहाँ है ? कैसा है ?	।=)
(१६)	क्या धर्म ? क्या अधर्म ?	।=)
(१७)	गहना कर्मणोगतिः	।=)
(१८)	जीवन की गूढ़ गुत्थियों पर तात्विक प्रकाश	।=)
(१९)	पंचाध्यायी	॥-)

व्यवहारिक जीवन की आध्यात्म शिक्षा।

आध्यात्मिकता, आनन्द मय जीवन बिताने की कला है। यदि आप इसी जीवन में स्वर्ग का प्रत्यक्ष आनन्द भोगने की इच्छा करते हैं तो निश्चय समझिए आप उसमें सफल हो सकते हैं। कैसे ? इस रहस्य को जानने के लिए इन पुस्तकों को पढ़िए। जीवन की व्यवहारिक सफलता के गुप्त मन्त्र इन पुस्तकों में मिलेंगे।

(२०) शक्ति संचय के पथ पर	।=)
(२१) आत्म गौरव की साधना	।=)
(२२) प्रतिष्ठा का उच्च सोपान	।=)
(२३) मित्र भाव बढ़ाने की कला	।=)
(२४) आन्तरिक उल्लास का विकाश	।=)
(२५) आगे बढ़ने की तैयारी	।=)
(२६) आध्यात्म धर्म का अवलम्बन	।=)
(२७) ब्रह्म विद्या का रहस्योद्‌घाटन	।=)

कमीशन देना कतई बन्द है। इसलिए इसके लिए लिखा पढ़ी करना बिलकुल व्यर्थ है। हां, आठ या इससे अधिक पुस्तकें लेने पर डाक खर्च हम अपना लगा देते हैं। आठ से कम पुस्तकें लेने पर डाक खर्च ग्राहक के जिम्मे है।

पुस्तक मिलने का पता—

मैनेजर—'अखण्ड-ज्योति' कार्यालय, मथुरा।

मुद्रक—पं० [illegible] लाल शर्मा, युगराज प्रिंटिंग वर्क्स, मथुरा।